जय जय महाश्रमण

नारीलोक

अंक 252-253 पंजीकृत कार्यालय : 'रोहिणी', अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल, लाडनूं (राजस्थान) जून–जुलाई 2019

अध्यक्षीय कार्यालय :
श्रीमती कुमुद कच्छारा
अम्हेर ज्वेलरी, ऑफिस नं. 6
लक्ष्मी भुवन, आनन्दजी लेन
रसिकलाल ज्वेलर्स के सामने
एम.जी. रोड़, घाटकोपर (ई)
मुम्बई – 77
मो. : 9833237907
e-mail : kumud.abtmm@gmail.com

Acharya Mahapragya Birth Centenary 1920-2020

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष

ज्ञान चेतना वर्ष

प्रेक्षाध्यान प्रदाता को नमन
जीवन विज्ञान संधाता को नमन
झुकी है जमीं, झुका है आसमां
आत्मज्ञान प्रदाता को नमन

प्रज्ञा के महासूर्य को नारी शक्ति का शत् - शत् नमन

अध्यक्षीय

लिखें शक्ति की नई ऋचाएं, अनुशासन के दीप जलाएं

संग चलें जब तीनों पीढ़ी, हरपल चढ़े विकास की सीढ़ी

प्रिय बहनों,

सादर जय जिनेन्द्र।

प्रत्येक व्यक्ति की आँखों में अनेक सपने तैरते हैं उनमें एक महत्वपूर्ण सपना है - सुन्दर, स्वस्थ और सुखी परिवार का। प्रश्न होता है - कौन करेगा ऐसे परिवार का निर्माण ? कैसे होगा ऐसे परिवार का निर्माण ? समाधान की खोज में जब निकली तो ज्ञात हुआ कि जिस परिवार के प्रत्येक सदस्य एक-दूसरे को सहन करते हैं, एक दूसरे के सुख-दुःख में अपनी भागीदारी रखते हैं, परंपराओं के प्रति सचेत रहते हैं, अर्थ या पदार्थ को जीवन का साध्य नहीं, साधन मानते हैं, मानवीय मूल्यों से जुड़कर रहते हैं, समय का सम्यक् नियोजन करते हैं, आकांक्षाओं के इन्द्रजाल से बचकर रहते हैं, पारिवारिक हित के लिए व्यक्तिगत हित को गौण कर देते हैं तथा आग्रह से दूर रहते हैं वो ऐसे परिवार का निर्माण कर सकते हैं। वस्तुतः सुखी परिवार का ताना-बाना बुनने में परिवार की तीनों पीढ़ी की जागरूकता व पारस्परिक तालमेल अपेक्षित है। स्वस्थ परिवार की संरचना के लिए एक-दूसरे के विचारों, व्यवहारों और तौर-तरीकों को सहन करना बहुत ही जरूरी है। सुंदर परिवार की परिकल्पना को साकार करने के लिए तीनों पीढ़ी का यह प्रण होना चाहिए कि हम किसी भी कीमत पर परिवार को बिखरने नहीं देंगे। इसके लिए उन्हें पारस्परिक विश्वास के जल से रिश्तों की जड़ों को सिंचन देना होगा।

जिस प्रकार एक पक्षी का श्रम से बनाया हुआ सुन्दर नीड़ आँधी के एक झौंके से बिखर जाता है, उसी प्रकार संदेह और असहिष्णुता की आंधी पीढ़ियों से संगठित परिवार को छिन्न-भिन्न कर देती है। वैसे जीवन की मुख्य तीन अवस्थाएं मानी गई है - बचपन, यौवन और बुढ़ापा। बचपन और यौवन को तो व्यक्ति अच्छे ढंग से जी लेता है पर वृद्धावस्था कइयों के लिए अभिशाप बन जाती है। सामान्यतया सत्तर वर्ष से अधिक अवस्था को बुढ़ापा माना जा सकता है। बुढ़ापे की दहलीज पर पैर रखते ही या उससे पूर्व भी इंद्रियां क्षीण होने के संकेत दिखाई देने लगते हैं। स्वभाव में परिवर्तन आना प्रारंभ हो जाता है। यह परिवर्तन परिवार के सदस्यों के अनुकूल भी हो सकता है, प्रतिकूल भी। स्मरण शक्ति भी कम होने लग जाती है। इन सभी कारणों से एक छत के नीचे रहने वाली तीन पीढ़ी के बीच विवाद होना शुरु हो जाता है। चूंकि बुजुर्गों के प्रति सम्मान ओर आदर रखना युवा तथा बालपीढ़ी का कर्तव्य है तो परिवार के बच्चों एवं युवाओं के बीच उदारता का परिचय देना बुजुर्गों का भी दायित्व है। मगर आज स्थितियां कुछ अलग है। वर्तमान युग की सबसे बड़ी समस्या है कि पीढ़ियों के बीच दूरियां बढ़ती जा रही है। आज एक अहम प्रश्न यह है कि हम किस तरह नई पीढ़ी और बुजुर्ग पीढ़ी के बीच बढ़ती दूरी को पाटने का प्रयास करें। आज की आधुनिक दिनचर्या में युवावर्ग प्रेम व स्नेह की संजीवनी में जीना तो चाहता है लेकिन भागदौड़ भरी जिंदगी में अपनों के लिए समय नहीं निकाल पाता और यही कारण है कि हम व हमारे बच्चे अपने बुजुर्गों के प्रेम, स्नेह, अनुभवों, सूझबूझ, ज्ञान संपदा व समृद्ध विचारों से लाभान्वित होने से वंचित रह जाते हैं। यदि इन तीनों पीढ़ी के बीच संवादिता और संवेदनशीलता इसी तरह लुप्त होती रही तो समाज और परिवार अपने नैतिक दायित्व से विमुख हो जाएगा।

एक समय था जब माता-पिता बच्चों को सही गलत का भेद समझने की सीख देते थे, जीवन भर साथ निभाने के संस्कार देते थे, गलत बात में अपनी संतान का पक्ष नहीं लेते थे, बेटी को ससुराल भेजने के बाद उसके परिवार में तथा उसकी जिंदगी में हस्तक्षेप नहीं करते थे और हाँ बेटियां भी अपने घर की बात माता-पिता को आसानी से नहीं बताती थी। मगर आज सब कुछ उल्टा हो गया है। समाज में परिवारों की स्थिति दिन प्रतिदिन गंभीर होती जा रही है। कुछ परिवारों को छोड़ दिया जाए तो संभवतः अधिकांश परिवारों में तलाक की समस्या दीमक बनकर परिवारों को खोखला बना रही है। अभिभावक अपने अहं का पोषण करने के लिए बच्चों की जिंदगी दाव पर लगा रहे हैं तो बच्चे अपनी मनमानी करके अभिभावक को गलत निर्णय लेने पर मजबूर कर रहे हैं। अपने बच्चों की गलती को सही साबित करने के लिए और समाज में प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए माँ-बाप तीसरी जिंदगी को सजा दे रहे हैं। तेजी से बढ़ती जा रही इस समस्या का अगर समय रहते हल नहीं ढूंढ़ा तो पता नहीं भविष्य हमारा कैसा होगा? मुझे लुई नवम् का एक प्रसंग याद आ रहा है - फ्रांस की

अध्यक्षीय

राज परम्परा में एक लोकप्रिय, प्रभावी एवं प्रतापी राजा हुए हैं – लुई नवम् । उन्होंने अपने जीवन की सफलता की चर्चा करते हुए उसका श्रेय अपनी माता को दिया है। जब वे बच्चे थे, एक दिन माँ ने उनको अच्छा आदमी बनने की प्रेरणा देते हुए कहा – 'बेटे, देखो तुम्हें कोई गलत काम नहीं करना है। यदि तुम गलत रास्ते से जाते हो, अपनी आत्मा पर किसी कलंक का टीका लगाते हो तो मैं तुम्हें सिहांसन पर बैठे देखने की बजाय सिंहासन को खाली देखना पसंद करूंगी और तुम्हे गलत कार्य करते देखूं, इसकी अपेक्षा तुम्हारी लाश देखना ज्यादा पसंद करूंगी।' बात कड़वी अवश्य थी, पर मार्मिक थी। बच्चे के हृदय को छू गई। बड़ी विनम्रता पूर्व लुई नवम् बोले – 'माँ मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि तुम्हारा यह बेटा भले ही राष्ट्र का राजा बने या न बने, परंतु एक अच्छा नागरिक अवश्य बनेगा।' उसी समय उन्होंने माँ से दिशा बोध पाकर अपने जीवन की दिशा सही बना ली। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है, उदाहरण मात्र है। ऐसे और भी कई उदाहरण मिल सकते हैं। पर मूल बात यह है कि आजकल इतने साहसिक माता-पिता और इतने आज्ञाकारी बच्चों की कमी होती जा रही है। हालांकि हर माँ-बाप बच्चों को सही राह पर चलने की ही सीख देते हैं। मगर बाहरी वातावरण उनकी सोच पर हावी हो जाता है। केवल दौलत के बलबूते पर बच्चों को अच्छा भविष्य देने की होड़ में नैतिक मूल्यों को भूल जाते हैं। बच्चे जब छोटे होते हैं तो अपनी जिद से हर मांग पूरी करवा लेते हैं और जब यौवन की दहलीज पर कदम रखते हैं तो मित्रजनों के सामने अपनी प्रतिष्ठा का प्रदर्शन करने के लिए अपने परिवार के उसूलों को भी छोड़ देते हैं। आजकल बच्चों में तथा युवा पीढ़ी में Self Controling Power बहुत ही कम हो गया है। वे बहुत जल्दी विचलित हो जाते हैं। कभी कभी तो ऐसा लगता है कि जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय लेने का अधिकार भी माता-पिता से छीन लेते हैं चाहे वो निर्णय शिक्षा का हो या दैनिक जीवन में खान-पान का, चाहे जीवनसाथी के चयन को हो चाहे कैरियर का। चिंतन की गहराई में जाते हैं तो प्रतीत होता है कि सिर्फ जन्म देने का अधिकार ही हमारा था, शेष सारे अधिकार तो उनके ही है। आजकल युवा पीढ़ी आत्महत्या का डर दिखाकर माता-पिता को गलत निर्णय में सहयोगी बनने के लिए मजबूर कर देती है। माता-पिता भी डरकर वैसा ही करने लग जाते हैं। आज अपेक्षा है परिवार में लुई नवम् की माता की तरह साहस बटोरने की और लुई नवम् की तरह विश्वासपात्र बनने की।

बहनों ! आज भी हमारे समाज में ऐसे परिवार भी है जहाँ जीवन के सातवें दशक पर खड़ी महिला यह बात कहती है कि हम लोग धर्म स्थान में नहीं जाते हैं, धार्मिक उपासना भी अपेक्षाकृत कम करते हैं, फिर भी हम अपने जीवन और व्यवहार से काफी संतुष्ट हैं। घर का वातावरण काफी अच्छा है। बहुएं-बेटे अनुकूल है। प्रेम से रहते हैं और शांति से जीते हैं। लड़ाई-झगड़ा तो दूर आपसी तनाव-खिंचाव की स्थिति भी नहीं बनती। बहनों! हम ऐसे परिवारों को आदर्श बनाएं। हम मंदिर या धर्मस्थान में जाएं या न जाएं, पर अपने घर को पवित्र मंदिर अवश्य बनाएं। यदि इस परिवार के अलावा और परिवार की हम बात करें तो हमारी संस्था और संघ भी बहुत बड़े परिवार के रूप में हमारे सामने है। संस्थाओं में भी हम देख रहे हैं कि जहाँ तीनों पीढ़ी के समन्वय से कार्य हो रहा है वहाँ संस्था निरन्तर संतुलित विकास के पथ पर आरोहण कर रही है। इसका सर्वोत्कृट उदाहरण हमारा धर्मसंघ है जिसमें हमनें आचार्य तुलसी-महाप्रज्ञ-महाश्रमण के युग को साक्षात देखा है। जहाँ शिष्य महाश्रमण के लिए गुरु तुलसी-महाप्रज्ञ की आज्ञा का पालन तथा उनके प्रति विनय और विवेक ही सर्वोपरि रहा, वहाँ पर अपने गुरु से उनको स्नेह, संपोषण और सम्मान भी कम नहीं मिला। तभी तो गर्व से कह सकते हैं –

तुलसी-महाप्रज्ञ-महाश्रमण चले हैं संग संग
तभी तो विकास के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच रहा है तेरापंथ धर्मसंघ

बहनों ! हम स्वीकार करें इस बात को कि

अगर बदल जाए युवा पीढ़ी व बुजुर्गों की सोच
तो नहीं करना पड़ेगा, कभी उन्हें अफसोस
बस बुजुर्गों को चाहिए थोड़ा प्यार और सम्मान
रखना है उनके खान-पान का हमें ध्यान
यूं ही यदि जीत लें तीनों पीढ़ी एक दूसरे का विश्वास
तो हरपल होगा विकास ही विकास

आपकी अपनी

कुमुद कच्छारा

ऊर्जावाणी

महाप्रज्ञ के चिंतन और साहित्य से जो लोग परिचित हैं, वे इनके बारे में अनेक प्रकार की कल्पनाएं करते हैं। कुछ लोग कहते हैं – महाप्रज्ञ जी दूसरे विवेकानंद है। कुछ व्यक्ति इनकी दार्शनिक गंभीरता देखकर सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन के साथ तुलना करते हैं। विवेकानन्द और राधाकृष्णन् भारत की महान् विभूतियां हुई है। उनके प्रति हमारे मन में आदर के भाव हैं। किन्तु तुलना के प्रसंग में मेरा यह चिंतन है कि महाप्रज्ञ को न विवेकानंद बनना है और न राधाकृष्णन्। महाप्रज्ञ कैसा? महाप्रज्ञ जैसा। इस अवधारणा में मुझे संतोष मिलता है। दो हाथों और दस अंगुलियों पर विश्वास करने वाला व्यक्ति किसी की अनुकृति क्यों बने? उसे अपने ढ़ंग से अपने व्यक्तित्व का निर्माण करना चाहिए। इसलिए महाप्रज्ञ को महाप्रज्ञ ही बने रहना है।

–आचार्य श्री तुलसी

अहंकार और ममकार के अल्पीकरण से ही व्यक्ति शांति एवं आनन्द की अनुभूति करता है। इसके लिए जरूरी है एकल की अनुप्रेक्षा। शांति व सकारात्मक विचार का सूत्र है – समता। श्वासप्रेक्षा और कायोत्सर्ग के अभ्यास से समता की चेतना को जागृत किया जा सकता है।

–आचार्य श्री महाप्रज्ञ

योग्यता-सुयोग्यता पद और सत्ता की तरह उत्तराधिकार में प्राप्त नहीं होती। वह या तो निसर्गज होती है अथवा व्यक्ति को तप-खप कर स्वयं ही उसे अर्जित करना होता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपने प्रभावी व्यक्तित्व, प्रखर कर्तृत्व एवं कुशल नेतृत्व से अपनी सुयोग्यता को सत्यापित किया है। न केवल तेरापंथ और जैन समाज में, अपितु पूरे भारतीय प्रबुद्ध समाज में आचार्य श्री महाप्रज्ञ का नाम एक मौलिक चिंतक, मूर्धन्य साहित्यकार, महान दार्शनिक एवं मनीषी संतपुरुष के रूप में बहुत सम्मान के साथ लिया जाता है। अपने महान अवदानों से तेरापंथ की तथा उसके माध्यम से दर्शन, धर्म, अध्यात्म, योग और भारतीय वांगमय की जो सेवा उन्होंने की है वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। तेरापंथ, जैन-शासन, भारतीय समाज और इनसे भी आगे मानव जाति उनकी उपकृत है।

–आचार्य श्री महाश्रमण

जिस प्रज्ञा ने महाप्रज्ञ सा रूप उकेरा
जिस प्रज्ञा ने तोड़ दिया जड़ता का घेरा
जिस प्रज्ञा ने नए क्षितिज उन्मुक्त कर दिए
जिस प्रज्ञा ने रीते जीवन-कुंभ भर दिए,
दीप्तिमान उस प्रज्ञा को है नमन हमारा।।

– साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष

के शुभारंभ पर
अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल
द्वारा स्वीकृत
ज्ञान-दर्शन-चारित्र

त्रिदिवसीय आराधना

30 जून 2019, रविवार – सामूहिक सामायिक का आयोजन करें –

- महाप्राण ध्वनि – 11 बार।
- 'ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरुवे नमः' का 11 बार जाप।
- महाप्रज्ञ अष्टकम् एवं महाप्रज्ञ प्रबोध का सामूहिक संगान।

संकल्प : भोजन में नमक का प्रयोग नहीं करना।

1 जुलाई 2019, सोमवार – रात्रि भोजन एवं जमीकंद का त्याग।

संकल्प : रात्रि संवर करना।

2 जुलाई 2019, मंगलवार – सामूहिक पक्खी प्रतिक्रमण का आयोजन करें।

संकल्प : कम से कम एक घण्टा मौन करना।

वार्षिक संकल्प आराधना

ज्ञानाराधना :–

- 5100 महिलाओं एवं कन्याओं को वर्ष भर में **संबोधि** आगम व **महात्मा महाप्रज्ञ** पुस्तक के स्वाध्याय से जोड़ना तथा **महाप्रज्ञ अष्टकम्** एवं **महाप्रज्ञ प्रबोध** कण्ठस्थ करना।

दर्शनाराधना :–

- सम्यक् दर्शन की विशुद्धि के लिए सतत् चिन्तन करना।
- ॐ णमो दंसणस्स की एक माला प्रतिदिन फेरना।
- वर्ष भर में कम से कम एक व्यक्ति को देव-गुरु-धर्म का स्वरूप समझाना (सुलभ बोधि बनाना)।

चारित्राराधना :–

- महीने में कम से कम 20 दिन रात्रि भोजन एवं जमीकंद का त्याग तथा रात्रि संवर करना।
- महीने में कम से कम एक रविवार को भोजन में नमक का प्रयोग नहीं करना।

अभिवन्दना के स्वरों में एक स्वर मेरा भी

मनाएं ज्ञान चेतना वर्ष, जीवन में लाएं नव उत्कर्ष

ज्ञान की चेतना को जागृत करने का ऐतिहासिक अवसर है - ज्ञान चेतना वर्ष। तेरापंथ धर्मसंघ के दशम् अधिशास्ता अध्यात्म ज्योति, प्रज्ञापुंज आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की जन्म सदी की अनमोल देन है - ज्ञान चेतना वर्ष। बहनों ! आओ हम भी अपने अन्तर की चौखट पर ज्ञान के तेजोमय दीप जलाएं। ''सम्बोधि'' के सुरम्य उपवन के सुरभित फूलों की महक से स्वयं को महकाएं।

परम पावन आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के सक्षम पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमणजी के दिशा दिर्शन में हमें ज्ञान की नई उड़ान भरनी है। धर्मसंघ के कृतज्ञतापूर्ण भावों की अभिव्यक्ति के शुभ संवत्सर में सालभर कर्तृत्व की कामयाबी के हस्ताक्षर करने हैं। भौतिकता की चमक दमक से परे सादगीपूर्ण जीवन जीने का संकल्प लेना है। इस वर्ष के लिए चिंतन के आकाश में संकल्पों के सूर्य उगाने हैं। आत्म शक्तियों की प्रस्फुरणा के लिए ध्यान योग की राह पर भी कदम बढ़ाने हैं।

प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञजी का जीवन साधना की प्रयोग भूमि था। उनका चिंतन सत्य के प्रयोगों की आधारभूमि था। उनका दर्शन अध्यात्म की भावभूमि था। उनकी यह जन्म सदी हमारी साधना, सत्य और अध्यात्म वृत्ति को निखारनेवाली हो यही अभ्यर्थना। प्रज्ञा के उस महासूर्य की शत्:-शत्: अभिवंदना.....

कुमुद कच्छारा, मुंबई

महाप्रज्ञ ने प्रज्ञा का आलोक बिखराया
ज्ञान का बोध देकर मिटाया अज्ञान का घेरा
तेरे वक्तृत्व एवं कर्तृत्व ने लाखों लाखों को तारा
हे दिव्य शक्ति, हे ज्योति पुंज, तुमसे ज्योतित नूतन सवेरा
टेन्शन की दुनिया में भटक रहे मनुज को
जीवन विज्ञान प्रेक्षा ध्यान से तूने उबारा
जन्म शताब्दी मनाये ''महिला मण्डल'' प्रेक्षा प्रणेता की
हे प्रभो श्रद्धासिक्त भावों से झेलो प्रणाम मेरा।

पुष्पा बैद, जयपुर

हे विश्वमैत्री के पोषक! अशांत विश्व को शांति का तुमने वर दिया।
हे अनैतिकता के शोषक! सबमें अहिंसा शक्ति को भर दिया।
युगों-युगों तक आभारी रहेगा समूचा संसार पाकर उपकार
हे करूणा के अथाह सागर! तव करूणा से जन-जन का हुआ उद्धार।
शत्-शत् नमन जन्म शती पर, हे युगदृष्टा करो स्वीकार।

सुनीता जैन, दिल्ली

चमक रहा गण के नभ में, जिनका पौरुष बन दिव्य सितारा।
जिनके अभिनव अवदानों से, मिला जन-जन को अमिट सहारा।
तुलसी के पट्टधर महाप्रज्ञ को, शत् शर्त सविनय नमन हमारा।।

नीलम सेठिया, सेलम

आचार्य महाप्रज्ञ के मौलिक चिंतन ने, आगमिक गहन गंभीर अध्ययन ने, साधना से प्राप्त अनुभवों ने सत्य की खोज में नए रास्ते खोले हैं। बनी बनाई परंपराओं का अंधानुकरण न कर आपने जो उपयोगिता की दृष्टि सबमें जगाई, यह उनके अनाग्रही चिंतन और सत्यान्वेषी प्रज्ञा का प्रतीक है। ऐसे युग पुरुष की जन्म शती पर शत्-शत् अभिवंदन।

सायर बैंगानी, दिल्ली

सीप-सीप दिल हार्दिक मुक्ताओं से देते आज बधाई
बालू सुत की जन्म शती पर बजती सुर दुंदुभि शहनाई
शब्द न आज समर्थ मौन ही गाता यश कीर्ति गाथा
हे महाप्रज्ञ ! हे कालजयी महर्षि ! देते शत्-शत् बार बधाई

सुशीला पटावरी, दिल्ली

आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा के पारगामी महापुरुष थे। ''महावीर का स्वास्थ्य शास्त्र'' पुस्तक के यदि हम फार्मुले अपनाएं तो आदमी ''आरोग्य बोहिलाभं'' का रहस्य प्राप्त कर सकता है। हम अपने जीवन को प्रयोगशाला बनाएं संकल्प जगाएं। उस महान योगी पुरुष की जन्म शताब्दी पर शत्:-शत्: नमन, वन्दन, अभिनन्दन।

तारा सुराणा, कोलकत्ता

विद्या विनय विवेक त्रिवेणी, प्रवाहमान है एक अंग में
आचार्य महाप्रज्ञ बने तीर्थधाम इस धर्मसंघ में
सीखें युग के सभी हमारे साधक, उनसे जीवन जीना
प्रज्ञा के उस महासूर्य से गौरवान्वित है निज सीना
शत्-शत् नमन।

प्रकाश देवी तातेड़, मुंबई

धर्म संघ के दसवें आचार्य प्रेक्षा प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व में प्रेक्षा और योग का अनुपम समन्वय था। वे महान दार्शनिक थे। राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर के शब्दों में हम उन्हें इस युग का विवेकानन्द कह सकते हैं। आपने जैन दर्शन के मौलिक स्वरूप का प्रतिपादन किया। आपने अध्यात्म का विशद विवेचन कर चिन्तन के नये आयामों को उद्घाटित किया है। जन्मशती पर शत्: शत्: नमन।

शान्ता पुगलिया, कोलकत्ता

कुछ महापुरुष ऐसे होते हैं जिनका नाम सदियों तक जन मानस पर अंकित रहता है। भारतीय संत परम्परा में आचार्य श्री महाप्रज्ञजी का नाम भी विशेष उज्वलता के साथ चमक रहा है। आप अतिन्द्रिय प्रतिभा के साक्षात प्रतिरूप थे। आगम सम्पादन के द्वारा आपने जैन शासन की अतुलनीय सेवा की तथा अनेक आध्यात्मिक ग्रन्थों की बेजोड़ रचना की। ऐसे युग प्रधान महान गुरुवर के चरणों में उनकी जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में कोटि-कोटि वंदना - अभिवंदना।

सौभाग बैद, जयपुर

सरस्वती के पुत्र ललाम, प्रज्ञाचक्षु तुम अभिराम।
तुलसी युग के योगीश्वर, गूंजे चिहुँ दिश प्रज्ञा-स्वर।
युग को दी नव दृष्टि विशाल, पहुंचा यश समंदर पार।
शत्-शत् वंदन हे गणनाथ ! जन्मशती का यह आगाज

कनक बरमेचा, सूरत

आचार्य महाप्रज्ञजी भारतीय ऋषि परम्परा और अध्यात्म जगत के महामनीषी और मानवता के मसीहा थे। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था। उन्होनें अनेकान्तवाद तथा समन्वयवादी दृष्टिकोण के साथ अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान जैसे अभिनव अभियानों के द्वारा न केवल भारत वर्ष में अपितु पूरे विश्व में एक नई दृष्टि और मूल्यबोध का निर्माण किया। ऐसे युगदृष्टा को शतशः नमन।

मधु दुगड़, कोलकत्ता

प्रेक्षा की पावन ज्योति से, प्रज्ञा के नव दीप जलाये
किया शोध अन्तर्यात्रा पर, चैत्य पुरुष जग जाये
अन्तःस्तल का स्पर्श अनूठा, महाज्ञानी महा कलाकार
तेरापंथ के दशम सूर्य को, अभिवन्दन है शत्-शत् बार

सूरज बरड़िया, कोलकाता

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी बीसवीं सदी के ऐसे एक युग पुरुष थे जिन्होंने कोई विशेष स्कूली शिक्षा प्राप्त नहीं की, किन्तु उनके अनुभवों से प्राप्त बोध ने मानव जाति को एक नया दर्शन प्रदान किया, आपकी साधना से उद्घाटित प्रयोग ने सहज, सरल और तनाव रहित जीवन शैली का नव आयाम स्थापित कर दिया, आपकी अमृत वाणी से प्रवाहित विश्रुत धारा ने नई संस्कृति का सूत्रपात किया। पग-पग पद रज से पवित्र धरती पर करूणा, शीतलता, माधुर्य और समन्वय का स्त्रोत उजागर कर परस्परोपग्रहो जीवानाम के मंत्र का उद्घोष दिया। बीसवीं सदी के इस महानायक की ये अविरल रश्मियां प्रत्यक्षतः इक्कीसवीं सदी के द्वार पर मात्र दस्तक ही दे पाई, पर काल के भाल पर उकेरे गए वो स्वस्तिक हर प्राणी के आभा मंडल को सदियों तक ज्योतिर्मय बनाते रहेंगे। युग पुरुष को युग की वन्दना-अभिवन्दना की सौगात में एक पुष्प मेरा भी।

सरिता डागा, जयपुर

साहित्य जगत का चर्चित नाम आचार्य महाप्रज्ञ। संसार को त्यागने वाला एक धर्म गुरु एवं सामाजिक, आर्थिक और व्यक्तिगत स्तर पर आने वाली सटीक समस्याओं का समाधान है आचार्य महाप्रज्ञ। जन-जन की प्रज्ञा को जगाने वाले, सही दृष्टि, सही दिशा दिखाने वाले उस महापुरुष, महान योगी को शत्-शत् नमन।

विजयलक्ष्मी भूरा, जयपुर

आचार्य महाप्रज्ञ की प्रज्ञा असाधारण व गुरु भक्ति अद्वितीय थी। ध्यान द्वारा वे आत्मा की गहराइयों तक पहुँचे, सत्य का स्पर्श किया और प्रेक्षाध्यान के रूप में 'ध्यान' की अलौकिक पद्धति से संसार को उपकृत किया। 'जीवन विज्ञान' के द्वारा मानव के आध्यात्मिक व चारित्रिक विकास की नींव रखी। समाज में बढ़ रहे वैमनस्य से विचलित मानव को राह दिखाने अहिंसा यात्रा पर निकले।

ऐसे मौन साधक, युग प्रवर्तक, राष्ट्र सन्त के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व की छाप तब तक रहेगी जब तक सूरज चाँद रहेगा। उनका 'जीवन' व 'विचार' युगों तक मानव जाति को प्रेरणा देता रहेगा। ऐसे सन्त को नमन शत्-शत् नमन

रंजु लुणिया, शिलोंग

संयम, तप, स्वाध्याय व ध्यान की अद्भुत अलख जगाई।
अपनी असीम प्रतिमा से गुरुवर ने संघ की शान बढ़ाई।
आगम का संपादन कार्य व सत्य का किया अन्वेशन,
अध्यात्म को जीकर दिखलाया, प्रेरित हुआ आज जन-जन।
ऐसे कालजयी व्यक्तित्व को पाकर हम खुद का सौभाग्य बढ़ाएं,
दिखलाये सन्मार्ग पर चलकर हम जीवन सफल बनाएं।

प्रभा घोड़ावत, इन्दौर

वह जन्मा खुले आसमान में,
आकाश सा व्यक्तित्व बनाने के लिए,
अज्ञ से प्रज्ञ, प्रज्ञ से महाप्रज्ञ,
महाप्रज्ञ से महावीर बन जाने के लिए,
श्रद्धा सिक्त भावों से वन्दना-अभिवन्दना।

पुष्पा बैंगानी, दिल्ली

अध्यात्म योगी हे सिद्ध पुरुष,
माँ सरस्वती के वरद पुत्र,
फैली महिमा तव दिग् दिगन्त,
प्रज्ञा की पावन रश्मियों से सकल लोक में किया उजियारा,
अध्यात्म सुमेरु महाप्रज्ञ के पादाम्बुज में श्रद्धासिक्त नमन हमारा।

कल्पना बैद, कोलकत्ता

आस्था के उत्तुंग शिखर पर, श्रद्धा के गहरे अंतःस्तल पर,
हे आर्य ! तुम्हें मैं देखूं तुम मिले तभी मिला चैतन्य,
मिट गये व्यवधान सब अब, तेरी प्रज्ञा की पूजा में तत्पर एक राग अनन्य हूँ मैं।

वीणा बैद, बेंगलुरु

महाप्रज्ञ थे महाप्रज्ञ,
ज्ञान के मार्ग पर, सत्य की खोज में,
जो सदा चिंतन में रहा जिनकी वाणी में, जो कहा वो हुआ,
जो स्वयं एक विचार था, सत्य का प्रकाश था,
अध्यात्म का विश्वास था,
जीवन का किया जिसने अनुसंधान,
महाप्रज्ञ था उस महात्मा का नाम।

सुमन नाहटा, दिल्ली

महाप्रज्ञ ! स्वीकारो अभिवंदन आज,
तेरे अवदानों से उपकृत है सकल समाज।
महाप्रज्ञ ! प्रज्ञा के उत्तुंग हिमालय, मेरी श्रद्धा के हो तुम आलय।
महाप्रज्ञ ! शताब्दी वर्ष पर श्रद्धाभरी वंदना,
शत्-शत् नमन तुम्हें, श्रद्धासिक्त अर्चना।

मधु देरासरिया, सूरत

सहज सौम्यता जिनके चेहरे पर रहती आठों याम,
सहज करूणामृत बरसाते, पीकर पाते थे आराम,
ऋजुता, मृदुता लघुता से शिखरों को छू गये,
ऐसे प्रभुतापूर्ण महाप्रज्ञ गुरुवर के चरणों में कोटीशः प्रणाम।

विमला दुगड़, जयपुर

हे महाप्रज्ञ आपकी प्रज्ञा सच में महान है,
मैं ही नहीं ये माने सारा जहाँ है,
उस महान प्रज्ञा की अन्तर रश्मियों को अपने जीवन में उतारूं,
कैसे उस तन्मयता से जीवन मेरा संवारू,
अभिवन्दना करती हूँ जन्म शताब्दी वर्ष में,
अन्तःप्रज्ञा को जगा कर, इन रश्मियों को,
जीवन में अपना कर करूं स्वप्न साकार।

सीए तरूणा बोहरा, मुंबई

'स्वस्मिन तिष्ठति इति स्वस्थः' तुमने मंत्र पढ़ाया,
योगासन-प्राणायाम का, तुमने पाठ पढ़ाया,
जीवन जीना एक कला है, जीवन विज्ञान से जीवन संवारा,
नमन तुम्हारे उस चिन्तन को, जिसने ध्यान, विज्ञान के अवदान दिये।
मानवीय चेतना हो रूपांतरित इस हेतु अभिनव प्रयास किए।

मंजु भूतोड़िया, दिल्ली

हे ज्यतिपुंज, हे प्रज्ञा कुंज, ओ महाप्रज्ञ तुमको प्रणाम,
शुभ भविष्य की गुरु तुलसी ने सौंपी थी तुझको कमान।
बन सूरज चमके नभ में, कितने अभिनव पथ दिखलाए,
आगम सम्पादन कर जग को, दी है नई दिशाएं।
चहुँ दिशा फैली गण शोभा, आर्य भिक्षु भी मुस्काए,
जगा स्वयं की प्रज्ञा को हम, महाप्रज्ञ को शीश झुकाएं।

नीतू ओस्तवाल, भीलवाड़ा

तेरापंथ धर्मसंघ के दशम अधिशास्ता परम पूज्य महायोगी महान दार्शनिक शान्तिदूत आचार्यश्री महाप्रज्ञ की जन्म शताब्दी पर मेरा तहे दिल से अति पवित्र भाव से श्रद्धासिक्त नमन। मेरे जीवन को दिशा देने वाले उसे करूणा दृष्टि को नमन। आपश्री ने संघ को धार्मिक दृष्टि से ही नहीं सामाजिक दृष्टि से भी उन्नत, उज्जवल क्षितिज पर लाकर नये नये आयाम दिये एवं जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान के माध्यम से पूरे विश्व को चमकाया।

लता जैन, बेंगलुरु

महाप्रज्ञजी को हमने देखा, महाप्रज्ञजी का कहा-सुना, महाप्रज्ञजी का लिखा-पढ़ा,
पर जरूरत है उसे भीतर तक उतारने की, यही उन्होंने प्रेक्षाध्यान में सिखाया,
बताया, पढ़ाया, प्रशिक्षण दिया, प्रेरित किया
बस उसे ही स्मरण कर उस युगपुरुष को नमन, नमन, नमन!

चन्दा कोठारी, जोधपुर

हे योगी पुरुष, हे प्रज्ञा प्रदाता, हे युग नायक
आभा मंडल देख तुम्हारा संपूर्ण विश्व हुआ अभिभूत
हाँ तुम ही तो थे रामकृष्ण परमहंस और तुम्हीं तो थे सुकरात
हे प्रज्ञासूर्य जाना यह हमने तुम्हारी उज्जवल रश्मियों से हो अभिस्नात
हे दिशा प्रदाता, देव जन्म शती पर तव चरणों में हूँ नतमस्तक और प्रणत

भाग्यश्री कच्छारा

ओ प्रज्ञा पुरुष ! करते तुम्हारा अभिनन्दन
ओ मानवता के मसीहा करते तुम्हें शत् शत् नमन
आपने जन-जन की किस्मत को संवारा है
जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान से फैलाया उजाला ही उजाला है।
आपकी इस जन्म शताब्दी की गूँज फैलेगी पूरे विश्व में एक मिसाल बन
जिससे गर्व करेगा यह तेरापंथ धर्म संघ हरदम।

सरिता बरलोटा, रायपुर

भारत राष्ट्र को सदा मिला आपसे बहुत उजियारा
भूली भटकी दुनिया के लिए आप थे ध्रुवतारा
प्रवाह ही ऐसा बहाया कि कण-कण हुआ हरा भरा
मझधार में डूबते को मिला प्रचुर सहारा।

पुष्पा नाहटा, पीलीबंगा

धर्मग्रन्थ के महाप्रवर्तक, अणुव्रत के प्रन्यासी, ज्ञान ध्यान के विश्व विशेषज्ञ महाप्रज्ञ सन्यासी।
दुनिया से ऐसे धर्मगुरु न गये ना कभी जाएंगे, झांक के देखो सच्चे मन से, यहीं नजर वो आऐंगे।

डॉ. नीना कावड़िया, राजसमन्द

अध्यात्म जगत के महासूर्य नक्षत्रों के उज्जवल नक्षत्र,
जन्म हुआ टमकोर धरा पर, गूंज उठा धरती अम्बर,
प्रेक्षा के महान पुरोधा महाप्रज्ञ अलंकरण से सुशोभित,
योगी पुरुष युगनायक को करती हूँ जन्म शताब्दी पर शत् शत् वन्दन।

मन्जु नौलखा, उधना

जन्म शताब्दी वर्ष पर हे योगीराज तुम्हें प्रणाम, जीवन विज्ञान शिक्षा का आयाम तव वरदान।
प्राण धारा संतुलित चिन्तन, क्षमता की आस्था का जागरण,
जुड़े अध्यात्म से शिक्षा, अनुशासित बने सदा आचरण।
हो सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास, स्मृति चिंतन, कल्पना बने,
जन्म 'शताब्दी वर्ष पर हे योगीराज तुम्हें प्रणाम।

जयश्री जोगड़, इचलकरंजी

आचार्य महाप्रज्ञ के मस्तिष्क में दुर्लभ ज्ञान मणियाँ थी। उनके हाथों में सृजन की लेखनी रहती थी। विश्व क्षितिज पर कुछ ऐसे सूर्य सम तेजस्वी विशिष्ट व्यक्तित्व उदित होते हैं जिनके आभा मण्डल से सम्पूर्ण विश्व आलोकित हो उठता है। उनके अवदान मानवता के लिए वरदान बन जाते हैं। विश्व विभूतियों की परम्परा में आचार्य महाप्रज्ञ का नाम प्रमुख है। शत्: शत्: प्रणाम।

शशि बोहरा, पटना

महाप्रज्ञ उस व्यक्तित्व का नाम है, जिनका पवित्र जीवन, उदात्त चरित्र, पारदर्शी व्यक्तित्व हर किसी को आर्कषित करने वाला था। उन्होंने आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक और शैक्षणिक क्षेत्रों में एक अभिनव क्रान्ति पैदा की। ऐसे दिव्य पुरुष का जन्म दिवस (शताब्दी वर्ष) मनाकर हम सात्विक गौरव की अनुभूति कर रहे हैं।

निर्मला चण्डालिया, वाशी-मुम्बई

अन्तर्मन पथ पर जो चरण धरयों
टमकोर रो बो साधक कठै.... वो बालुजी को लाल कठै
वो चौरड़िया परिवार को चिराग कठै.... वो प्रेक्षाध्यान प्रणेता कठै....
वो हर श्रद्धावान भक्त रे हृदय में बसे

राजश्री पुगलिया, कालीकट

प्रज्ञा के आभावलय से जिसने जनमानस को आलोकित किया,
प्रेक्षा ध्यान, जीवन विज्ञान से - मनुज के तम को दूर किया।
हे महामानव, हे महाप्रज्ञ, आया है जन्म शताब्दी वर्ष
भावों का अर्ध्य चढ़ाकर, आज पुलकित होकर हम मनाएं हर्ष।

सीमा बैद, गुलाबबाग

मुनि नथमल से महाप्रज्ञ का गौरव गान सुनाएं, कालू कर से पाई दीक्षा, तुलसी से शिक्षा का पाठ।
श्रद्धा विनय और समर्पण, तेजस्वी वक्ता विद्धान, प्रेक्षा ध्यान जीवन विज्ञान का, जग को दिया महा अवदान।
युगदृष्टा को शत् शत् प्रणाम।

सुधा नौलखा, मैसूर

आचार्य महाप्रज्ञजी के बारे में लिखना सूरज को दीपक दिखाने के समान है। आप बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। महान विद्धान, कवि, लेखक व उच्च कोटि के विचारक होने के साथ आपमें विनम्रता विवेकशीलता जबरदस्त थी। आपका संकल्प वज्र सा था। हे योगीराज जन्म सदी पर शत्-शत् प्रणाम।

शोभा दुगड़, कोलकत्ता

प्रेक्षाध्यान की उपसंपदा की एक चर्या है भावक्रिया, इसका तात्पर्य है भावों को बदलना। भावों में सुगंध भी है, दुर्गंध भी है। यदि भाव सुगंधित है तो आगे विकास करना, अगर भावों में दुर्गंध है, उसका परिष्कार करना।

यह स्वस्थ जीवन जीने का टॉनिक है। प्रेक्षाध्यान के द्वारा सत्य की खोज करना। स्थूल भावों से हटते हुए गहराई में उतरना। अपने आप को देखना। ऐसे अनेक अवदान प्रदान करने वाले आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के दिखाये मार्ग पर चलकर ही हम उनकी जन्म शताब्दी को सार्थक और सफल बना सकते हैं।

''ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरुवेः नमः''

प्रेमलता सिसोदिया, मुंबई

विविध विलक्षणताओं का संगम महाप्रज्ञ का जीवन दर्शन,
विनम्र व्यवहार, ऋजु दृष्टिकोण सदा संयत आचरण,
गुरु के कृपा पात्र बन छूई विकास की अपरिमित ऊँचाइयां,
जन्म शताब्दी के स्वर्णिम अवसर पर देते मंगल बधाइयाँ।

जयश्री बडाला, मुंबई

नए-नए तव अवदानों से, उपकृत है सारा संसार,
श्रुत रत्नों से भरा आर्यवर, तुमने इस गण का भंडार,
कालजयी है कृतियां तेरी, भरती सब में नूतन स्पंदन,
हे युगदृष्टा ! जन्म सदी पर श्रद्धानत करते शत् वंदन।

विमला नाहटा, मुंबई

महात्मा महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी, ज्ञान चेतना वर्ष घोषित,
दिये अवदान बने वरदान, जन-जन हर्षित,
जन-जन हर्षित, जन्मा एक नक्षत्र पुण्यवान,
धर्म-चक्रवर्ती, लोक-महर्षि, सम्मानित हुये सम्मान,
प्रतिपल चाहे अदिति, बनूं श्रावक प्रतिमा,
बरसे आशीर्वर ऐसा, आत्मा बने महात्मा।

अदिति सेखानी, अहमदाबाद

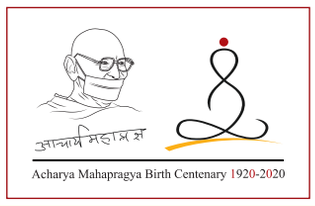

अखिल भारतीय तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा स्वीकृत वार्षिक संकल्प आराधना ... संबोध संयम का...

- प्रतिदिन नमस्कार महामंत्र की एक माला या कम से कम 21 बार जाप ।
- प्रतिदिन ॐ भिक्षु की एक माला ।
- प्रतिदिन आधा घण्टा मौन ।
- प्रतिदिन पन्द्रह मिनट स्वाध्याय ।
- शनिवार की सामायिक (यथासंभव)।
- वर्ष भर के लिए कोई एक जमीकंद का त्याग ।
- महीने में पन्द्रह दिन नवकारसी ।
- दिन भर में तीन घण्टे का तिविहार/चौविहार त्याग ।
- रात्रि दस बजे के बाद तिविहार त्याग ।
- सप्ताह में एक दिन मोबाइल की पोरसी ।
- सप्ताह में एक दिन फास्ट फूड खाने का त्याग ।

बहनों ! वैश्वीकरण (ग्लोबलाइजेशन) के इस युग में आज हर चीज नजदीक होती जा रही है। देश की दूरियां जितनी कम हो रही है उतनी ही दिल की दूरियां बढ़ती जा रही है। आज रिश्ते दिल के तराजू से नहीं दौलत के तराजू से तोले जा रहे हैं। एक समय में जब रिश्ते अनमोल हुआ करते थे, आज रिश्तों के मूल्य के मापदंड बदल चुके हैं। जहाँ चार-चार पीढ़ियां एक छत के नीचे खुशी-खुशी रहती थी वहाँ आज एक पीढ़ी का साथ रहना भी मुश्किल हो गया है।

बहनों ! आइए हम सब मिलकर सुलझाएं इन रिश्तों की पहेलियों को इस माह की कार्यशाला में .....

WE connect
Communicate Collaborate Create

के अन्तर्गत आयोजित करें....

Connection with Next Generation

सीख लें अगर रिश्तों की ABCD, खुशहाल रहेगी हर पीढ़ी

चिन्तन करें.....

क्या है मजबूरी ? क्यों बढ़ रही है दूरी ?

- शिक्षा और सभ्यता में बदलाव, बढ़ रहा है अहं का टकराव
- विचारों में है भारी अन्तर, कैसे रहे परिवार के अन्दर
- है संयुक्त परिवार, पर कम हो रहा पारस्परिक प्यार

समाधान ढूंढें.....

पीढ़ियों का हो आपस में लय,

तभी बढ़ेगा पारस्परिक समन्वय

- अपनाएं अनेकान्त का सिद्धांत
  - अहं होगा स्वतः शान्त
- बढ़ाएं आपसी समझ,
  हर समस्या जाएगी सुलझ
- संस्कार होंगें उन्नत,
  घर-परिवार बनेंगे जन्नत

इस माह का संकल्प - प्रतिदिन के भोजन में ऊपर से नमक का प्रयोग नहीं करना।

करणीय कार्य - जुलाई

बहनों ! आज हर जगह विश्वास, विस्तार और विकास की बातें हो रही है और आवश्यक भी है। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी भी प्रायः अपने भाषण में कहते हैं - सबका साथ..... सबका विकास और साथ में अब जोड़ दिया है सबका विश्वास। जब आपस का विश्वास बढ़ेगा तो विस्तार भी होगा और समग्रता से विकास भी होगा। समग्र विकास से तात्पर्य है कि शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक, बौद्धिक, आर्थिक एवं सामाजिक विकास। हम देखते हैं सागर में गहराई है मगर ऊँचाई नहीं, आसमान में ऊँचाई है पर गहराई नहीं, सूर्य में तेजस्विता है मगर शीतलता नहीं और चन्द्रमा में शीतलता है पर तेजस्विता नहीं।

बहनों ! जुलाई माह की कार्यशाला में हम जानेंगे कि बीसवीं सदी में एक ऐसा महामानव इस धरती पर अवतरित हुआ जिसमें गहराई भी थी, ऊँचाई भी, तेजस्विता भी थी और शीतलता भी और भी बहुत कुछ था। वह लोक महर्षि कालजयी व्यक्तित्व है प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञजी। उनकी जन्म शताब्दी वर्ष के शुभारम्भ पर

WE connect
Communicate Collaborate Create

के अन्तर्गत आयोजित करें

Connection with Holistic Approach

नया चिंतन नयी सोच, जीवन में अपनाएं Holistic Approach

''महाप्रज्ञ प्रबोध'' प्रश्नमंच का आयोजन करें

प्रश्न मंच का आयोजन विभिन्न गुप बनाकर ही किया जाये।

- प्रत्येक राउण्ड में उत्तर देने की समय सीमा एवं अन्य नियम स्थानीय क्षेत्र के आधार पर स्वयं तय करें।
- प्रतियोगिता में कम से कम चार राउण्ड हो तथा महाप्रज्ञ प्रबोध के 81 पद्य एवं उसके गद्य का समावेश हो।
- **प्रथम राउण्ड - पद्य राउण्ड** - पद्य के नंबर की चिट बनाई जाये और प्रत्येक ग्रुप लॉटरी सिस्टम से चिट उठाकर जो नंबर आये उस नंबर के पद्य का संगान करें।
- **द्वितीय राउण्ड - गद्य राउण्ड (प्रश्नोत्तरी)** - गद्य में से प्रश्न बनाकर चिट सिस्टम से प्रत्येग ग्रुप को पूछा जाये।
- **तृतीय राउण्ड - संकेत राउण्ड** - पुस्तक के परिशिष्ट में जो सांकेतिक घटनाएं दी है उसकी चिट बनाकर उसके माध्यम से उसे दर्शाते हुए पद्य का संगान करें।
- **चतुर्थ राउण्ड - बुझो तो जानें** - प्रतियोगिता कराने वाली बहिन चिट के माध्यम से पद्य की अंतिम पंक्ति ''हो सुजना .....'' का उच्चारण करें और प्रतियोगी बहिनें उस पद्य को प्रारंभ से गाएं।

  चार राउण्ड के पश्चात् यदि प्रथम, द्वितीय, तृतीय का निर्णय हो जाता है तो ठीक है, यदि नहीं होता है तो समान अंक प्राप्त करने वाले ग्रुप के लिए एक और राउण्ड करवाया जाये।
- **पंचम राउण्ड - संस्मरणों का वातायन** - इसमें यदि प्रोजेक्टर की व्यवस्था हो तो उसके माध्यम से नहीं तो किसी अन्य माध्यम से विक्रम संवत् के आधार पर किसी घटना विशेष को दर्शाया जाये और प्रतियोगी उसे पहचान कर उस पद्य का संगान करें।
- **विजेता गुप की कोई भी एक बहिन बैंगलुरु में राष्ट्रीय अधिवेशन में आयोजित महाप्रज्ञ प्रबोध प्रश्नमंच प्रतियोगिता में भाग ले सकेगी। नाम श्रीमती रमण पटावरी को नोट करवा दें।**

इस माह का संकल्प - ''ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरुवे नमः'' प्रतिदिन एक माला का जाप करें

करणीय कार्य - जून - जुलाई

बेटियों के बढ़ते कदम - फहराएं विकास के परचम

प्यारी बेटियों

सादर जय जिनेन्द्र !

समय का चक्र निरंतर गतिमान है। देखते ही देखते हमारा यह साथ और सफर अपने अंतिम पड़ाव की ओर है। 20 माह के सफर में आपने श्रम और निष्ठा से अपने कर्तृत्व को उजागर किया। घर, केरियर और शिक्षा की दोहरी-तिहरी जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए भी आप पूर्ण समर्पण भाव से केन्द्र द्वारा निर्देशित प्रत्येक कार्य को सक्रियता से अंजाम देती रही यह देखकर आपकी कर्मजा शक्ति को प्रणाम करती हूँ और सात्विक गौरव की अनुभूति करती हूँ कि आप जैसी कन्याओं के हाथों में हमारा भविष्य निश्चित ही सुरक्षित रहेगा। प्यारी बेटियों बस अब समय आ गया है अपने कर्तृत्व को एक नया आकार देने का। परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर की पावन सन्निधि में बैंगलुरु में आयोजित राष्ट्रीय कन्या अधिवेशन में आप सभी सादर आमंत्रित हैं। पूज्य प्रवर के पुनीत आभावलय में हम ऐसी ऊर्जा को प्राप्त करेंगे जिससे हमारा हर कदम उच्च जीवन निर्माण, आत्म विकास की ओर बढ़े.....

उत्साही आलेख की स्वर्णिम आभाओं! आओ मिल संबोध पायें।।
संघीय संस्कारों का ज्ञान ले, एक नई पहचान बनायें।।

आपकी
मधु देरासरिया

जून

इस माह विश्व पर्यावरण दिवस है। आपको पर्यावरण सुरक्षा की जागरूकता बढ़े इस उद्देश्य के साथ ''पर्यावरण बचाओ'' विषय पर समाज में चित्रों के माध्यम से जागरूकता फैलानी है। सोसायटी, मॉल, स्कूल की दिवार, वृक्ष पर आदि स्थानों पर drawing, Painting आदि के द्वारा यह संदेश प्रचारित करना है।

UNIQUESHALA - Let's Dive..... with Facebook Live

Last but not least अपने Uniqueshala के अंतिम प्रशिक्षण को लेकर हम होंगे साथ और करेंगे बात (9 जून दोपहर 12 बजे)

Learn a hobby, use your leisure
Time is a greatest treasurer

Importance of learning new things and importance of financial independence

मार्च, अप्रैल, मई, जून के Uniqueshala के आयोजन के लिए मुंबई, साउथ कोलकाता, पूर्वांचल और हैदराबाद कन्या मंडल का हार्दिक आभार.....

जुलाई

जुलाई का समय चातुर्मास के प्रारंभ एवं चारित्रात्माओं की सन्निधि का समय है। इस समय का सम्यक् उपयोग करते हुए हम आध्यात्मिक उत्कर्ष व आत्मविकास की ओर बढ़े। अतः इस माह की कार्यशाला में आपको चारित्रात्माओं से विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करना है। जहाँ चारित्रात्माएं न हो वहाँ उपासक या अन्य विशेष जानकारी रखने वाले व्यक्ति से भी प्रशिक्षण ले सकते हैं।

अध्यात्म का ज्ञान, विकास का सोपान

प्रशिक्षण के बिन्दु :-

- जानें - गोचरी विधि
- वंदन विधि और वंदना करने के लाभ
- चारित्रात्माओं से कैसे करें बात
- छोटे-छोटे संकल्पों से निर्जरा (खाते-पीते मोक्ष)

आवश्यक दिशा निर्देश

- पूर्व प्रेषित निर्देशानुसार **दिनांक 20 जून 2019** गुरुवार को नारी जाति के उन्नायक गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के 23 वें महाप्रयाण दिवस पर विसर्जन रैली का आयोजन करें।
- **दिनांक 30 जून 2019** को प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की जन्म शताब्दी वर्ष का मंगल शुभारंभ ''ज्ञान चेतना वर्ष'' के रूप में परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में बेंगलुरु में होने जा रहा है। शताब्दी वर्ष के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के अन्तर्गत **दिनांक 30 जून, 1,2 जुलाई 2019 को सभी शाखा मंडल अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना का भव्य आयोजन करें** तथा अधिक से अधिक भाई-बहन, कन्या-किशोर व बालक-बालिकाओं को जोड़ने का प्रयास करें। साथ ही साथ वार्षिक संकल्प साधना से भी सभी को जोडें तथा सूची महामंत्री कार्यालय में प्रेषित करें। इसकी विस्तृत रूपरेखा नारी लोक के इस अंक में दी गई है।
- बहनों ! जैसा कि आप सभी को निर्देश दिया गया है कि सभी शाखा मंडल 15 जून से 15 जुलाई तक यथासंभव चातुर्मास प्रारंभ होने से पूर्व ही अपने-अपने क्षेत्र में चुनाव करवा लें। अतः आप सभी ने अपने दायित्व के विसर्जन की तथा नए नेतृत्व के स्वागत की तैयारियां कर ली होगी।
- बहनें विशेष ध्यान दें कि हर क्षेत्र में नई बहन को अवसर दें। यदि कोई ऐसा छोटा क्षेत्र है जहाँ कोई अध्यक्ष बनना ही नहीं चाहता और वापस बनना पड़ रहा है तो कृपया राष्ट्रीय अध्यक्ष की जानकारी में अवश्य लाएं जिससे उस क्षेत्र की स्थिति का अवलोकन किया जा सके।
- महिला मंडल के साथ-साथ कन्या मंडल संयोजिका का भी चयन किया जाता है। कन्याओं के लिए भी ध्यान दें कि यदि पहले से पता है कि अमुक कन्या की निकट भविष्य में शादी निर्धारित है तो कृपया उसे न बनाया जाए।
- जिन शाखा मंडलों के मान्यता पत्र में पिछले कई वर्षों से राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री के हस्ताक्षर नहीं हुए है और उनका रजिस्ट्रेशन शुल्क भी बकाया है तो शीघ्र ही कृपया कार्यालय प्रभारी श्रीमती सुमन नाहटा-9314206965 से सम्पर्क करें।
- छोटे शाखा मंडल जुलाई माह में महाप्रज्ञ प्रबोध पर प्रश्नमंच का आयोजन नहीं कर सके तो कृपया पुस्तक के गद्य भाग से लिखित (ओबजेक्टीव) प्रतियोगिता का आयोजन अवश्य करें।
- बहनों ! चातुर्मास के दौरान विशेष धर्म आराधना का लक्ष्य बनाएं। तप, जप, ध्यान, स्वाध्याय आदि में अपने समय का नियोजन करें।

साधना का मजबूत चरण - श्रावक प्रतिक्रमण

- बहनों! अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में पूरे देशभर में चातुर्मासिक पक्खी प्रतिक्रमण के भव्य आयोजन का क्रम अत्यन्त सुचारू एवं सुव्यवस्थित रूप से चल रहा है। अब समय आ गया है पुनः पिछले चार माह में हुए पापों की आलोचना करने का। **दिनांक 16 जुलाई 2019 मंगलवार** को सभी शाखा मंडल चातुर्मासिक पक्खी प्रतिक्रमण का सामूहिक आयोजन अवश्य करें। अधिक से अधिक श्रावक-श्राविकाओं को इस अभियान से जोड़ें और श्रावकत्व को पुष्ट करने का प्रयास करें।

श्रद्धाप्रणत
अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

ज्योतिर्मयी, सूर्यपुत्री, सरस्वती स्वरूपा, मातृहृदया असाधारण साध्वीप्रमुखाश्रीजी के 60वें दीक्षा दिवस एवं 79वें जन्मदिवस पर अमित आस्थासिक्त हृदयोद्गार...

आत्मनिष्ठ, अध्यात्मनिष्ठ, जो कर्मनिष्ठ-कर्त्तव्यनिष्ठ है,
समयनिष्ठ जो नियमनिष्ठ है, श्रम-श्रमयुत जो सत्यनिष्ठ है।
उन चरणों का अभिनन्दन है, वन्दन करते भाव भरा,
पुलक उठी है दसों दिशाएं, महक रहे हैं गगन धरा।
जिनके शब्दों का संजीवन, महिलाओं में शक्ति भरता,
जिनका मंगल पथदर्शन, पथ की सब बाधाएं हरता।
उनको शत्-शत् नमन करें हम।
उनको शत्-शत् नमन करें हम।।

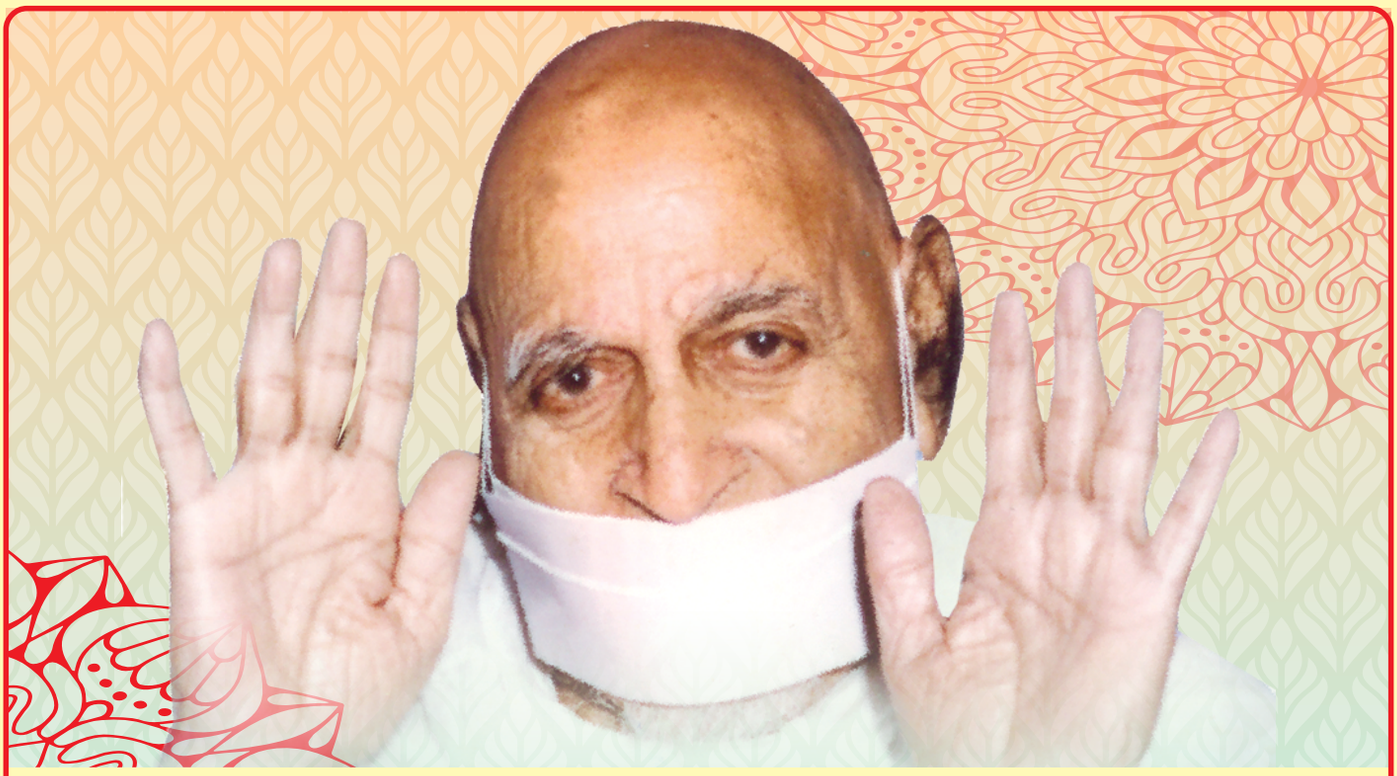

असन्तोषात् मा संतोषं गमय

विसर्जन

विसर्जन की चेतना के उत्प्रेरक,
बीसवीं सदी के शलाका पुरुष,
जन-जन की आस्था के धाम,
मानवता के मसीहा,
नारी जाति के पुनरुद्धारक,
गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी
के 23वें महाप्रयाण (विसर्जन दिवस)
पर महिला समाज का
श्रद्धासिक्त भावभरा वन्दन

विसर्जन का आध्यात्मिक मूल्य भी है
एवं सामाजिक मूल्य भी है।
यह कोई दान या चंदा नहीं है जो किसी ने कर दिया।
घर का हर व्यक्ति चाहे छोटा हो या बड़ा, स्त्री हो या पुरुष,
बुजुर्ग हो या बच्चा, सब में विसर्जन का संस्कार आये,
त्याग की चेतना जागृत हो, इस पर सबको ध्यान देना है।

आचार्य महाप्रज्ञ

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल
विसर्जन अभियान के द्वारा समाज की आध्यात्मिक
चेतना जगा रहा है। उत्तरवर्ती काल में यह समाज की
आर्थिक विषमता को कम करने में सहायक होगा।

आचार्य महाश्रमण

विसर्जन एक ओर अनासक्ति को प्रोत्साहन देता है
तो दूसरी ओर समाज के जरूरतमंद लोगों की
अपेक्षाओं की पूर्ति में योगदान करता है,
इससे केवल वर्तमान पीढ़ी ही नहीं,
भावी पीढ़ियां भी उपकृत होगी।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

"संबोध" संघीय संस्कारों का 15वाँ राष्ट्रीय कन्या अधिवेशन 5,6,7 अगस्त 2019 बेंगलुरु में

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में राष्ट्रीय कन्या मंडल अधिवेशन का आयोजन किया जा रहा है।

दिशा निर्देश

- बड़े क्षेत्रों से 7 और छोटे क्षेत्रों से 4 कन्याएं सहभागी बनेगी, यथासंभव वर्तमान एवं पूर्व कन्या संयोजिका, सह संयोजिका भाग लें।
- रजिस्ट्रेशन दिनांक 5 अगस्त को सुबह 8 बजे से प्रारंभ होगा एवं दि. 7 अगस्त को दोपहर 2 बजे बाद आप प्रस्थान कर सकती है।
- अपना मान्यता पत्र अवश्य साथ लाये, अगर आपका कन्या मंडल नया रजिस्टर्ड है और मान्यता पत्र नहीं मिला हो तो अधिवेशन में प्राप्त कर लें।
- प्रत्येक सत्र में गणवेश अनिवार्य है।

  गणवेश – सफेद कुर्ता, सलवार या पटियाला एवं लाल रंग की जेकेट
- प्रतिनिधि शुल्क रू. 300 (प्रति व्यक्ति) रहेगा।
- कन्याओं के साथ एक महिला संरक्षिका (प्रभारी) अवश्य आये।
- कन्याओं को सादगी और शालीनता का परिचय देना है।
- अपने साथ ओढ़ने, बिछाने एवं सामयिक उपकरण अवश्य लाये।
- अपने करणीय कार्य पूर्ण करके रिपोर्ट फोरमेट 10 जून तक केन्द्र में अवश्य भेजे ताकि आपके कर्तृत्व को प्रतिवेदन में स्थान दे पाये।
- तेरापंथ प्रबोध के 65 से 125 पद्य एवं सम्पूर्ण गद्य की तैयारी करके आये।
- वर्षभर की अपनी गतिविधियों का फोटो कोलाज (4 X 2 ') का बनाकर साथ लाये।

विशेष – अपने आगमन की सूचना 15 जुलाई तक अवश्य दें ताकि आपकी समुचित व्यवस्था हो सके।

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें :–

9427133069
श्रीमती मधु देरासरिया
(रा. कन्या मंडल प्रभारी)

9448063260
श्रीमती वीणा बैद
(रा. कार्य समिति सदस्य)

8976601717
श्रीमती तरूणा बोहरा
(रा. कन्या मंडल सह प्रभारी)

9980443204
श्रीमती मधु कटारिया
(विजयनगर, बेंगलुरु कन्या मंडल प्रभारी)

9620334041
सुश्री शैफाली जैन
(विजयनगर, बेंगलुरु कन्या मंडल संयोजिका)

चारित्रात्माओं की तत्वज्ञान की परीक्षा दिनांक 17 और 19 अगस्त 2019 को मध्यान्ह 1 बजे से 4 बजे तक होगी। आपके क्षेत्र में कोई भी साध्वीश्रीजी एवं समणी वृन्द परीक्षा देना चाहते हैं तो राष्ट्रीय संयोजिका श्रीमती मंजु भूतोड़िया को सूचित करें।

महिला मण्डल

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का 44 वाँ राष्ट्रीय वार्षिक अधिवेशन ''संबोध'' 16, 17, 18 सित. 2019 को बेंगलुरु में

परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का 44 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन दिनांक 16, 17, 18 सितम्बर 2019 (सोमवार, मंगलवार, बुधवार) को बेंगलुरु में आयोजित है।

- 15 सितम्बर 2019 रविवार को दोपहर 2.00 बजे से रजिस्ट्रेशन प्रारंभ होगा। सायंकालीन सत्र का भी आयोजन होगा।
- 17 सितम्बर 2019 मंगलवार को साधारण सभा का आयोजन होगा।
- 18 सितम्बर 2019 बुधवार को दोपहर में (प्रथम सत्र के पश्चात्) अधिवेशन का समापन होगा।
- 15 सितम्बर दोपहर से 18 सितम्बर सुबह तक आवास की व्यवस्था रहेगी। सामान रखने हेतु 18 सितम्बर शाम 5 बजे तक क्लोक रूम की व्यवस्था उपलब्ध रहेगी। तत्पश्चात् हमारी जिम्मेदारी नहीं होगी।
- बड़े क्षेत्रों से 7 तथा छोटे क्षेत्रों से 4 बहनें प्रतिनिधि के रूप में भाग लें। नव मनोनीत अध्यक्ष-मंत्री एवं निवर्तमान अध्यक्ष-मंत्री का आना अनिवार्य है। किसी विशेष परिस्थितिवश नहीं आ सके तो पदाधिकारी का आना अनिवार्य है।
- रजिस्ट्रेशन केवल अधिवेशन में भाग लेने वाली बहिनों का ही होगा।
- रजिस्ट्रेशन शुल्क प्रत्येक प्रतिनिधि के लिए 500/- रूपये रहेगा।
- आभूषण व कीमती सामान की जिम्मेदारी आपकी होगी। कृपया सादगी व संयम का परिचय दें।
- अधिवेशन के दौरान सभी सत्रों में गणवेश पहनना अनिवार्य है।
- ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र एवं सामायिक उपकरण साथ में अवश्य लायें।
- अधिवेशन के दौरान अनुशासित व सशक्त कार्यकर्ता का परिचय देना है।
- अधिवेशन में आने हेतु अपने आगमन की स्वीकृति 25 अगस्त 2019 तक महामंत्री कार्यालय में श्रीमती मंजुला डुंगरवाल - 09841399155 को अवश्य दें।
- एयरपोर्ट आचार्य प्रवर के प्रवास स्थल से 65 कि.मी. दूर है वहां से आने या जाने में लगभग 2 से 2-30 घंटे लगते हैं अतः अपनी टिकट उसी के अनुसार बनवायें।

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें :-

09113593025	09952426060	09110873818
श्रीमती शशिकला नाहर	श्रीमती नीलम सेठिया	श्रीमती सरला श्रीमाल
राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य

कन्या मण्डल

Talent Hunt का Result

प्रथम	-	भाविका बरड़िया, चैन्नई	तृतीय	-	सेजल श्रीश्रीमाल, बालोतरा
द्वितीय	-	अंकिता सहलोत, राजनगर	तृतीय	-	दीपशिखा लूणिया, कोयम्बटूर
द्वितीय	-	अर्चना संचेती, गुलाब बाग	प्रोत्साहन	-	महक डुंगरवाल, सेलम
तृतीय	-	वर्षा बोहरा, मुंबई	प्रोत्साहन	-	अंकिता श्रीश्रीमाल, हुबली

श्रुतोत्सव

आइये ! श्रुतोत्सव मनायें ! श्रुत की आराधरा करें।

श्रुतधर आचार्य श्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत इस अनोखे उत्सव का आयोजन दिनांक 8 और 9 अगस्त 2019 को बेंगलुरु में किया जा रहा है। वर्तमान में स्वयं की पहचान और इस लोक को जानने का महत्वपूर्ण माध्यम है श्रुतज्ञान। जैसे-जैसे व्यक्ति श्रुतज्ञान के सागर में डुबकी लगाता है वह अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति करता है। यह आनन्द का उत्सव है जिसमें श्रुतज्ञान के पायदानों पर आरोहण करने वाले प्रचेता भाई-बहन सहभागी बनेंगे। इस उत्सव के मुख्य आकर्षण है -

- **पूज्यवरों की विशेष सेवा सान्निध्य**
- **दीक्षांत समारोह (वर्ष 2013 से 2018 तक के प्रचेताओं हेतु)**
- **तत्त्वज्ञान प्रतियोगिता**
- **नये पाठ्यक्रम का शुभारम्भ**
- **पुरस्कार प्रोत्साहन**

श्रुतोत्सव में आने वाले प्रचेताओं के लिए आवश्यक निर्देश :-

- वर्ष 2009 से 2012 तक के तत्वप्रचेता भी इसमें सहभागी बनें।
- सभी तत्व प्रचेता छः वर्ष के थोकड़े कंठस्थ करके आये। (पच्चीस बोल की चतुर्भंगी, चर्चा, तत्वचर्चा, लघुदण्डक, बावन बोल, कर्मप्रकृति, प्रतिक्रमण, इक्कीस द्वार, संजया, नियंठा, कायस्थिति, पांच ज्ञान तथा गतागत)
- सभी भाई बहन 7 अगस्त को पहुँच जाये।
- 7 अगस्त को 2 बजे से 9 अगस्त को सुबह 10 बजे तक आवास उपलब्ध रहेगा।
- 7 अगस्त को 11 बजे से रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ होगा।
- रजिस्ट्रेशन शुल्क 500/- रूपये प्रति व्यक्ति रखा गया है।
- अपने ओढ़ने बिछाने व आवश्यक सामान साथ में लेकर आये।
- बहनें गणवेश तथा भाई सफेद वस्त्र पहनने हेतु लायें। दीक्षांत समारोह में गणवेश ही पहना जायेगा।
- एयरपोर्ट आचार्य प्रवर के प्रवास स्थल से 65 कि.मी. दूर है वहां से आने या जाने में लगभग 2 से 2-30 घंटे लगते हैं अतः अपनी टिकट उसी के अनुसार बनवायें।

अन्य जानकारी हेतु सम्पर्क करें :-

9742457333	9480404746	9686366250
श्रीमती लता जैन	श्रीमती लता गादिया	श्रीमती पुष्पा गन्ना
राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य	व्यवस्थापिका बेंगलुरु	व्यवस्थापिका बेंगलुरु

तत्वज्ञान / तेरापंथ दर्शन विशेष परीक्षा

तत्त्वज्ञान के छठे वर्ष और तेरापंथ दर्शन के पांचवे वर्ष की विशेष मौखिक व लिखित परीक्षा का आयोजन दिनांक 9 व 10 अगस्त को परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में बैंगलुरु में किया जायेगा।

- परीक्षार्थियों को 9 अगस्त को दोपहर 1 बजे से आवास दिया जायेगा।
- 10 अगस्त को दोपहर 12 बजे तक आवास उपलब्ध रहेगा।
- 9 अगस्त को दोपहर 3 बजे से मौखिक परीक्षा होगी।
- रजिस्ट्रेशन शुल्क प्रति व्यक्ति 200/- रूपये होगा।
- अपने ओढ़ने-बिछाने व जरूरत का सामान साथ में लाये।

अन्य जानकारी हेतु सम्पर्क करें -

निदेशिका - श्रीमती पुष्पा बैंगानी, 9311250290 राष्ट्रीय संयोजिका - श्रीमती मंजु भूतोड़िया, 9312173434

परम पूज्य गुरुदेव के 58 वें जन्मोत्सव एवं 10 वें पट्टोत्सव का सैलम में भव्य आयोजन

तेरापंथ धर्मसंघ के शिखर पुरुष परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के 58 वें जन्मोत्सव व 10 वें पट्टोत्सव का भव्य आयोजन दक्षिण भारत के सुंदर शहर सेलम में श्रावक समाज द्वारा भव्य रैली से किया गया। पतंगों पर पूज्य प्रवर का 58 संबोधनों द्वारा अभिनन्दन किया गया। महामंत्री श्रीमती नीलम सेठिया ने अपनी कर्मभूमि पर गुरु का स्वागत करते हुए कहा कि आपकी मुख मुद्रा कष्ट हरने वाली है, आपकी वाणी अमृत रस का पान कराती है। धन्य हुई यह धरा जहाँ ऐसे ज्योतिर्धर आचार्य का मंगल अभिषेक हो रहा है। साथ ही जन्म दिवस पर संकल्प चक्र और संकल्प फाइल भी गुरु चरणों में समर्पित की। जन्म दिवस पर पूज्य प्रवर के प्रति मंगलकामना प्रेषित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने गुरु चरणों में 1008 पचरंगी की माला समर्पित की। 58 वें जन्मोत्सव की मंगल बेला में मुख्य मुनिश्री, मातृहृदया साध्वीप्रमुखाश्रीजी, मुख्य नियोजिकाजी, साध्वीवर्याजी, साधु-साध्वी, समणी वृंद एवं श्रावक समाज ने गुरुवर को जन्मदिवस की बधाई अर्पित करते हुए उनके दीर्घायु व स्वस्थ जीवन की मंगलकामना की। सेलम महिला मंडल ने सुन्दर गीतिका के माध्यम से नेमानंदन से महाश्रमण तक के सफर का वर्णन किया। साथ ही सेलम से 58 जोड़ों ने एक वर्ष के लिए 10 संकल्पों की सौगात पूज्य प्रवर के श्री चरणों में भेंट की। बच्चों ने भी संकल्पों की भेंट पूज्य प्रवर के चरणों में अर्पण की। सेलम कन्यामंडल द्वारा निर्मित ऐनिमेशन फिल्म Shramanhood भी प्रस्तुत की गयी। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा भी सुंदर प्रस्तुति दी गयी। जिसमें संयोजिका श्रीमती आभा बैद का श्रम मुखरित हो रहा था। कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष, महामंत्री के साथ ट्रस्टी श्रीमती प्रकाश देवी तातेड़, रा.का.स. श्रीमती लता जैन, श्रीमती शशि नाहर, श्रीमती मंजुला डुंगरवाल, श्रीमती सुनीता बोहरा, श्रीमती सरिता दुगड़ एवं श्रीमती सरला श्रीमाल का स्वागत सेलम महिला मंडल द्वारा किया गया। सेलम महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती उच्छल डुंगरवाल, सभा अध्यक्ष, तेयुप अध्यक्ष आदि ने भी कार्यक्रम में अपने भावों की प्रस्तुति दी।

मातृहृदया महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्रीजी की पावन सन्निधि में सेलम महिला मंडल की संगोष्ठी आयोजित की गयी। महामंत्री श्रीमती नीलम सेठिया ने कर्म भूमि पर पूज्यवरों के पदार्पण के अनुपम अवसर पर अपने भाव भरे उद्‌गार व्यक्त किये। महाश्रमणीवरा ने प्रेरणा देते हुए कहा कि बहनें श्रावक कार्यकर्ता के रूप में तैयार हो और अपना आध्यात्मिक विकास करे। मंडल आध्यात्मिक पर्यवेक्षक शासन गौरव साध्वीश्री कल्पलताजी ने मंडल को पोषण देते हुए बहनों को जागरूक, कर्मठ, साहसी व समर्पित रहने की प्रेरणा दी। स्थानीय अध्यक्ष श्रीमती उच्छव डूंगरवाल ने मंडल की गतिविधियों का उल्लेख किया। श्रीमती कंचन सेठिया, श्रीमती पुष्पा बैद ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। मंत्री श्रीमती शालिनी लुंकड़ ने आभार ज्ञापित किया।

एकादशम अधिशास्ता के जन्मोत्सव एवं पट्टोत्सव पर देशभर में हुआ पंचरंगी का भव्य आयोजन

महातपस्वी परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी के 58 वें जन्म दिवस एवं 10 वें पट्टोत्सव के अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा श्रद्धा के विभिन्न रंगों से भरी नन्ही तपोमय भेंट पचरंगी के लिए सम्पूर्ण महिला समाज से किये गये एक आह्वान पर हजारों श्रद्धालुओं ने महातपस्वी को नन्हें-नन्हें तप की भेंट चढ़ा कर अभ्यर्थना प्रेषित की। पचरंगी तप के अभियान के माध्यम से लोगों में इसके प्रति विशेष आकर्षण हुआ एवं लोगों को छः विगय के संदर्भ में विशेष जानकारी भी प्राप्त हुई। **नवकार माला, तिविहार त्याग, विगय वर्जन, सामायिक एवं मौन व्रत** की असम, आंध्रप्रदेश, उड़ीसा, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, कर्नाटक, केरल, हरियाणा, बिहार, दिल्ली तमिलनाडु, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल आदि सभी राज्यों में लगभग 8000 पचरंगी से प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ने वाले सभी भाई-बहनों के प्रति हार्दिक साधुवाद एवं धन्यवाद।

देशभर में हुए विभिन्न आयोजनों में राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पदाधिकारियों की उपस्थिति

कन्या मंडल Got Talent

मुंबई – अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित मासिक कार्यशाला के अंतर्गत मुंबई कन्यामंडल द्वारा ''कन्या मंडल Got Talent'' कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने मुख्य अतिथि के तौर पर शिरकत की। समणी निर्वाण प्रज्ञाजी के मंगलपाठ एवं मंगल पाथेय के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। 15 Finalist कन्याओं ने विभिन्न Talent (Dancing, Singing, Magic, Yoga, Mono act, Poetry, Art etc.) के माध्यम से अपने हुनर की प्रस्तुति दी। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कन्याओं के कार्यों की एवं हुनर की प्रशंसा करते हुए उन्हें सर्वांगीण विकास करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में राष्ट्रीय कन्या मंडल सह प्रभारी श्रीमती तरूणा बोहरा, ट्रस्टी श्रीमती प्रकाश देवी तातेड़, रा.का.स. एवं मुंबई महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती जयश्री बडाला, रा.का.स. श्रीमती भाग्यश्री कच्छारा की गरिमामयी उपस्थिति रही। मिस एशिया श्रीमती पिंकी राजगिरिया भी विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित रही। कार्यक्रम का सुंदर संचालन मुंबई कन्या मंडल प्रभारी श्रीमती मीना कच्छारा, सहप्रभारी श्रीमती प्रीति बोथरा, श्रीमती पूनम परमार एवं श्रीमती किंजल खिमेसरा ने किया। मुंबई कन्या मंडल संयोजिका मानसी बागरेचा, सहसंयोजिका ध्रुवी मादरेचा, दीपांशी धोका, रिया चोरड़िया आदि कन्याओं के श्रम व विशेष सहयोग से कार्यक्रम बेहद सफल रहा। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान वर्षा बोहरा, द्वितीय वंशिका कच्छारा एवं तृतीय स्थान खुशी मादरेचा ने प्राप्त किया। किंजल डांगी, डिम्पल सिंघवी, प्राची इंटोदिया एवं रविना बाफना को प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ। निर्णायक के रूप में उपस्थित संदेशजी यादव, दिव्याजी वाधवानी, विनोदजी विठ्ठल एवं जयकुमारजी नायडू के निर्णय को श्रीमती अंजु बाफना ने पेश किया। 350 से अधिक दर्शकों की उपस्थिति ने कन्याओं को विशेष Motivate किया।

अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव

कांदीवली (मुंबई) – जैन धर्म के पर्वों में से एक विशेष पर्व अक्षय तृतीया का आयोजन आचार्य श्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती आगम मनीषी मुनिश्री महेन्द्र कुमारजी स्वामी एवं समणी डॉ. निर्वाण प्रज्ञाजी, समणी विनितप्रज्ञाजी एवं समणीवृंद के सान्निध्य में किया गया। 38 तपस्वियों के वर्षीतप की तपस्या की अनुमोदना की गयी जिसमें दो कन्या मंडल की कन्याऐं भी थी। इस पावन अवसर पर मुनिश्री अजितकुमारजी के 14 वें वर्षीतप के पारणे की पूरे श्रावक समाज द्वारा अनुमोदना एवं सुख पृच्छा की गयी। मुनिश्री जागृत कुमारजी ने पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि भगवान ऋषभ को मानने की जगह भगवान ऋषभ की माने। मुंबई सभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्रजी तातेड़ ने सभी का भावभरा स्वागत किया। डॉ. मुनिश्री अभिजीत कुमारजी ने मंच का कुशल संचालन करते हुए पाथेय भी प्रदान किया । राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने संपूर्ण महिला समाज की ओर से सभी तपस्वियों के तप की अनुमोदना की। मुंबई महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती जयश्री बडाला, सभा मंत्री विजय पटवारी एवं श्रीतुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन मंत्री श्री कमलेश बोहरा व अन्य महानुभावों ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम में अभातेयुप निर्वतमान अध्यक्ष श्री बी.सी. भलावत, श्री सलील लोढ़ा, श्री रमेश चौधरी आदि गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। राष्ट्रीय टीम से परामर्शक श्रीमती प्रेमलता सिसोदिया, श्रीमती विमला नाहटा व कार्यसमिति सदस्य श्रीमती कांता तातेड़ की गरिमामयी उपस्थिति रही।

थाना (मुंबई) – परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमणजी की विदुषी शिष्या साध्वी श्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी आदि साध्वीवृंद के सान्निध्य में तेरापंथी महासभा के निर्देशन में मुंबई सभा द्वारा पंच दिवसीय महाराष्ट्र स्तरीय कन्या संस्कार निर्माण शिविर अरूणोदय का आयोजन थाना में किया गया। मुंबई में प्रवासित महासभा के निवर्तमान अध्यक्ष श्रीमान किशनलालजी डागलिया सहित समस्त पदाधिकारीगण एवं मुंबई सभाध्यक्ष श्रीमान नरेन्द्रजी तातेड़ सहित सभी पदाधिकारीगण की उपस्थिति रही। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा, ट्रस्टी श्रीमती प्रकाश देवी तातेड़, परामर्शक श्रीमती प्रेमलता सिसोदिया, रा.का.स. मुंबई महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती जयश्री बडाला, श्रीमती निर्मला चण्डालिया, श्रीमती तरूणा बोहरा, श्रीमती मीना कच्छारा, श्रीमती प्रीति बोथरा, श्रीमती अनिता धारीवाल, श्रीमती सुमन चपलोत आदि सभी की गरिमामय उपस्थिति रही। महिला मोर्चा की अध्यक्ष माधवीजी नायक तथा मिनाक्षी शिंदे भी उपस्थित हुई। सभी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए शिविर के प्रति शुभकामनाएं प्रेषित की। साध्वीद्वय ने विशेष प्रेरणा पाथेय प्रदान किया। प्रारंभ के कार्यक्रम का संचालन जंयतीलाल जी बरलोटा एवं शेष संचालन साध्वी डॉ. सुधाप्रभाजी ने किया। शिविर में पूरे महाराष्ट्र से लगभग 150 से अधिक कन्याओं ने भाग लिया।

प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का 10वाँ महाप्रयाण दिवस

कोपरखेणा (मुंबई) – प्रज्ञा के महासूर्य आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के 10 वें महाप्रयाण दिवस पर आचार्यश्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती शिष्य मुनिश्री जिनेश कुमारजी एवं मुनिश्री परमानंदजी के सान्निध्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दशम अधिशास्ता के प्रति भावांजलि व्यक्त करते हुए जिनेश मुनि ने उनके जीवन के अनछूए संस्मरणों से लोगों को अवगत करवाया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने संपूर्ण महिला समाज की ओर से गुरुवर के प्रति भावांजलि व्यक्त करते हुए महिला समाज के उन्नयन में उनके महत्वपूर्ण योगदान को बताया तथा साथ ही कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ केवल तेरापंथ धर्मसंघ नहीं अपितु पूरे विश्व के एक महान दार्शनिक संत थे। मुनिश्री परमानंदजी ने कविता के माध्यम से भावाजंलि प्रस्तुत की। कार्यक्रम में राष्ट्रीय ट्रस्टी श्रीमती प्रकाश देवी तातेड़, रा.का.स. श्रीमती निर्मला चंडालिया की गरिमामयी उपस्थिति रही। मुंबई सभा, अणुव्रत समिति एवं अन्य सभी सभा संस्था के पदाधिकारियों ने भी दशम अधिशास्ता को भावांजलि प्रेषित की।

डोंबिवली (मुंबई) – दशम अधिशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के महाप्रयाण दिवस पर साध्वी श्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वी श्री मंगलप्रज्ञाजी तथा साध्वीवृंद के सान्निध्य में कार्यक्रम का आयोजन डोंबिवली क्षेत्र में किया गया। साध्वी श्री अणिमाश्रीजी व साध्वी श्री मंगलप्रज्ञाजी ने कहा कि उस महापुरुष के लिए कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाने समान है। साध्वीद्वय ने अपनी अद्भुत प्रवचन शैली से परिषद् को मंत्रमुग्ध कर दिया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने कहा कि महासूर्य की रोशनी पाकर महिला समाज धन्य हुआ। उनके द्वारा प्रशस्त मार्ग पर चल कर महिला समाज ने विकास के अनेक आयामों को छूआ है। कार्यक्रम में महासभा के निर्वतमान अध्यक्ष श्री किशनजी डागलिया ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र तातेड़, मंत्री विजय पटवारी, श्री तुलसी फाउण्डेशन के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र जी कोठारी व अन्य पदाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

वापी – श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी ट्रस्ट वापी द्वारा विराट भिक्षु भजन संध्या का आयोजन किया गया। गुजरात के छोटे मगर सक्रिय क्षेत्र वापी में संभवतः पहली बार ऐसे भव्य कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें सुमधुर संघ गायक भाई श्री कमलजी सेठिया ने देर रात तक संगीत की स्वर लहरियों से ऑडिटोरियम को गुंजायमान किया। ट्रस्ट के अध्यक्ष परम पूज्य गुरुदेव के संसार पक्षीय भ्राता श्रीचंदजी दुगड़, सभाध्यक्ष रमेशजी कोठारी एवं सभी पदाधिकारियों एवं ट्रस्टीगण द्वारा सभी का स्वागत किया गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुई। अतिथि विशेष में अभातेयुप के महामंत्री संदीप जी कोठारी, पारमार्थिक शिक्षण संस्था के मंत्री मदनलालजी तातेड़, अभातेममं की ट्रस्टी श्रीमती प्रकाशदेवी तातेड़, लक्ष्मीलाल जी बाफना, अनिल जी चंडालिया, किशनलालजी डागलिया, रमेशजी सुतरिया आदि सभी गणमान्य पदाधिकारी उपस्थित हुए। वापी में ट्रस्टी के रूप में सेवा देने वाले मुंबई के रमेश कुमारजी धाकड़ तथा भंवरलालजी कर्णावट भी उपस्थित हुए। वापी सभा द्वारा डायरेक्ट्री का विमोचन किया गया। इस अवसर पर सभी संस्था के पदाधिकारियों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने बधाई देते हुए कहा पारस्परिक सौहार्द बढ़ाने व संगठन को मजबूत करने के लिए ऐसे आयोजनों की उपयोगिता है। महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती संगीता महनोत ने सभी का स्वागत किया। तेयुप अध्यक्ष संजयजी ने कार्यक्रम का सुंदर संचालन किया।

अभातेयुप का ''सरगम'' एवं आचार्य तुलसी जैन हॉस्टल उद्घाटन

बेंगलुरु – अभातेयुप के सामाजिक कार्यों के अन्तर्गत बैंगलुरु में हॉस्टल के निर्माण में आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी की सहवर्तिनी साध्वी शासन श्री साध्वी मंजुरेखाजी, साध्वी श्री कीर्तिलताजी एवं साध्वी श्री मधुस्मिता जी के सान्निध्य में उद्घाटन के पूर्व आयोजित कार्यक्रम में अ.भा.ते.यु.प. अध्यक्ष श्री विमल कटारिया व महामंत्री श्री संदीप कोठारी ने सेवा-संस्कार-संगठन के लिए अभातेयुप के द्वारा किये जाने वाले कार्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शायी। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के तौर पर उपस्थिति राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने अभातेयुप को बधाई प्रेषित करते हुए कहा कि इस रचनात्मक कार्य से समाज में शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कार्य हुआ है। साथ ही विशेष कहा कि हॉस्टल में रहने वाले छात्रों में संस्कार व संस्कृति की भावना अधिक पुष्ट होती रहे। हॉस्टल के उद्घाटन कर्ता श्रीमती सायर देवी हीरालालजी मालू का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय व स्थानीय स्तर के कई पदाधिकारियेां की गरिमामयी उपस्थिति रही। पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती वीणा बैद भी इस अवसर पर मौजूद रही।

मुंबई – अभातेयुप के तत्वावधान में तेयुप सायन कोलीवाडा द्वारा ''सरगम – 2'' के प्रथम क्वार्टर फाइनल का आयोजन किया गया। अभातेयुप अध्यक्ष श्री विमल कटारिया एवं महामंत्री श्री संदीप कोठारी ने कहा कि इस प्रकार के आयोजनों द्वारा समाज की प्रतिभाओं को मंच प्रदान करना हमारा मुख्य उद्धेश्य है। कार्यक्रम में संघ गायक श्री कमल सेठिया एवं श्रीमती मीनाक्षी भूतोड़िया ने मधुर स्वरों में भक्ति गीतों से सुंदर समां बांधा। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा के साथ राष्ट्रीय टीम से श्रीमती प्रकाशदेवी तातेड़, श्रीमती जयश्री बडाला आदि बहनों ने कार्यक्रम में शिरकत की। संभागी ग्रुप में से 6 टीम सेमीफाइनल राउण्ड में पहुँची। इस सुरीले भक्ति रस से परिपूर्ण कार्यक्रम में अनेकों गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। डोंबीवली (मुंबई) महिला मंडल की टीम ने शेष 11 टीम पर अपनी विशेष छाप छोड़ी।

नोएडा महिला मंडल का रजत जयंती समारोह

नोएडा – अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के छोटे क्षेत्रों में एक सक्रिय शाखा मंडल नोएडा के रजत जयंती समारोह का भव्य आयोजन इंदिरा गांधी कला केन्द्र में किया गया। प्रधान ट्रस्टी श्रीमती सायर बैंगानी की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि महासभा के प्रधान न्यासी कन्हैयालालजी पटावरी थे। नोएडा महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती भारती दुगड़ ने भावपूर्ण स्वागतोद्गार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम में मंडल के इतिहास पर आधारित स्मारिका का विमोचन किया गया। स्थानीय उपाध्यक्ष श्रीमती सुमन बोथरा ने राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा के शुभकामना संदेश का वाचन किया। कार्यक्रम में आचार्य महाप्रज्ञ जन्मशती के उपलक्ष में उनके जीवन का चित्रण भी प्रस्तुत किया। गणेश वंदन एवं महावीर अष्टक्रम पर भी सुंदर प्रस्तुति दी गयी। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने भी सुंदर प्रस्तुति दी। दिल्ली सभा अध्यक्ष श्री तेजकरण जी सुराणा एवं महासभा न्यासी ने नोएडा महिला मंडल को बधाई प्रेषित करते हुए उनके कार्यों की सराहना की। कार्यक्रम में राष्ट्रीय टीम से पूर्वाध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैंगानी, उपाध्यक्ष श्रीमती सुनीता जैन, सहमंत्री श्रीमती विजयलक्ष्मी भूरा, रा.का.स. श्रीमती मंजु भूतोड़िया एवं श्रीमती सुमन लुणिया की गरिमामयी उपस्थिति रही। श्रीमती कविता लोढ़ा एवं श्रीमती आरती कोचर कार्यक्रम की संयोजिका रही। डॉ. श्रीमती अर्चना भंडारी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया व मंत्री श्रीमती सुमन सिपानी ने सभी का आभार ज्ञापन किया। स्थानीय सभा संस्था के पदाधिकारियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम को शोभायमान किया।

चातुर्मास को सफल बनाने हेतु बेंगलुरु में हुई संगोष्ठी

बेंगलुरु – गांधी नगर (बेंगलुरु) सभाभवन में शासन श्री साध्वी श्री कंचनप्रभाजी ठाणा 5 से मंगल पाठ सुनकर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा की अध्यक्षता में बेंगलुरु के सभी परिसीमित सातों शाखा मंडल गांधीनगर, विजयनगर, यशवंतपुर, हनुमंतनगर, राजाजीनगर, राजराजेश्वरी, टी दासरहल्ली की बहिनों के साथ संयुक्त बैठक हुई ।

सर्वप्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष का तिलक लगाकर सभी बहिनों ने स्वागत किया ।आपने संस्था की बहिनों को परिसीमन का सही उद्धेश्य व कल्याण परिषद् के नियम की सही जानकारी देते हुए कहा कि गुरु दृष्टि की आरधना करना हमारा परम कर्तव्य है। निकट भविष्य में होनेवाले गुरूदेव के चातुर्मास में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की ओर से आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी दी एवं बहिनों से आह्वान किया कि हमें जागरूकता के साथ चारित्रात्माओं की रास्ते की सेवा करनी है। बहिनों ने अपनी जिज्ञासाओं का समाधान पाया और आश्वासन दिया कि शीघ्र ही कोष विभाजन की प्रक्रिया को संपादित करेंगे।

राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य श्रीमती वीणा बैद, श्रीमती शशिकला नाहर, श्रीमती सरला श्रीमाल भी उपस्थित थे। स्वागत गीतिका राज राजेश्वरी महिला मंडल की बहिनों के द्वारा हुई । वीणा जी ने कुशल संचालन किया। कार्यक्रम के मध्य 3 जुलाई को पूज्य प्रवर के कर कमलों से दीक्षित होने वाली मुमुक्ष बहिन दर्शिका जैन का भी आगमन हुआ। उन्होंने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए सभी को दीक्षा महोत्सव में आमंत्रित किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने साहित्य भेंट कर परिवार जनों का सम्मान किया तथा मंगल भावना प्रेषित की। इस अवसर पर चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के महामंत्री श्रीमान दीपचंदजी नाहर भी उपस्थित हुए। उन्होंने राष्ट्रीय अध्यक्ष का भावभरा सम्मान करते हुए चातुर्मास में पूर्णतया सहयोग करने की भावना व्यक्त की।

शासनस्तंभ का महाप्रयाण, नम नयनों से अंतिम प्रणाम

जयपुर – 7 मई 2019 अक्षय तृतीया के पवित्र पावन दिन तेरापंथ धर्म शासन के स्तंभ ने मानो अपने वेदनीय कर्म का क्षय कर लक्षित मंजिल की दिशा में प्रस्थान करने का मुहूर्त पहले से ही तय कर लिया था। शुभ दिन, शुभ घड़ी और शुभ भावों के साथ अपनी अंतिम सांसों का विसर्जन कर यों संसार से विदा हो जाना महापुरुषों के जीवन का शुभ लक्षण होता है। ऐसे ही भारतीय संत परम्परा के उज्जवल नक्षत्र, नैतिक मूल्यों को उजागर करने वाले, जैन तत्व के ज्ञाता, तेरापंथ दर्शन मनीषी शासन स्तंभ श्रद्धेय मंत्री मुनि सुमेरमलजी स्वामी 'लाडनूं' के अचानक देवलोकगमन के संवाद से मानो पूरे देश में कोहरा सा छा गया। आपका यों सहसा समय सागर में समाहित हो जाना ऐसा लगा जैसे कोई दिव्य ज्योति अक्षय तृतीया के दिन समूचे संसार में अलौकिक उजाला बांटकर सदा के लिए अदृश्य हो गयी। जैसे कोई चिंतामणी रत्न हाथ से फिसल गया हो या फिर किसी वटवृक्ष की छाया में रहने वाले पथिक के सिर से वटवृक्ष सदा के लिए हट गया हो। तेरापंथ धर्मसंघ के शासन स्तंभ के अंतिम दर्शन हेतु देशभर से श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा भी इस दुःखद संवाद को सुनकर अंतिम दर्शन हेतु जयपुर पहुँची। साथ में जयपुर के राष्ट्रीय पदाधिकारी श्रीमती सौभाग बैद, श्रीमती पुष्पा बैद, श्रीमती सरिता डागा, श्रीमती विजयलक्ष्मी भूरा, श्रीमती विमला दुगड़ एवं दिल्ली में समागत श्रीमती सुमन लुणिया तथा जयपुर शहर एवं सी-स्कीम महिला मंडल की बहनों ने भावपूर्ण गीत के माध्यम से श्रद्धाजंलि अर्पित की। सी-स्कीम महिला मंडल ने इस अवसर पर संकल्प कार्ड बनाये जिसके माध्यम से उपस्थित जनमेदनी ने संकल्प स्वीकार कर अपनी श्रद्धा अभिव्यक्त की।

श्रद्धेय मंत्री मुनि प्रवर के अनन्य सहयोगी ज्ञानशाला के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक प्रबुद्ध व्यक्तित्व के धनी मुनिश्री उदितकुमारजी के सान्निध्य में दूसरे दिन गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया जिसमें विशेष तौर से साध्वीश्री प्रतिभाप्रभाजी, साध्वीश्री शुभप्रभाजी आदि साध्वी वृंद तथा समणी निर्मल प्रज्ञाजी तथा समण सिद्धप्रज्ञजी उपस्थित हुए तथा अपनी भावांजलि प्रस्तुत की। लगभग 4 से 5 घंटे तक चली इस गुणानुवाद सभा में मुनिश्री उदित कुमारजी ने श्रद्धेय मंत्री मुनि प्रवर के जीवन की संक्षिप्त झांकी प्रस्तुत करते हुए अपने प्रति किये उपकार हेतु कृतज्ञता ज्ञापित की। मुनिश्री पुलकित कुमारजी, मुनिश्री अनंतकुमारजी आदि सभी संतों ने अपनी भावांजलि प्रस्तुत की। जयपुर के विभिन्न सभा संस्था के पदाधिकारियों ने तथा बाहर से समागत अन्य श्रद्धालुओं ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने श्रद्धा समर्पित करते हुए कहा कि पिछले लगभग दो दशक पूर्व मंत्री मुनि प्रवर मेरे जीवन में पिता बनकर आये और सदैव मेरा मार्गदर्शन करते रहे। मुझ जैसे कोरे कागज पर आपश्री ने हस्ताक्षर करके मूल्यवान बना दिया। आपके मेरे जीवन में तथा महिला समाज पर अनन्त उपकार है। उसे कभी भूल नहीं पाउंगी। महिला समाज को आपने सदैव नई दिशा दी। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने उनके द्वारा प्रदत्त प्रेरणा एवं मार्गदर्शन को सदा जीवन में आत्मसात करते हुए आगे बढ़ने का संकल्प लेकर संपूर्ण महिला समाज की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

शासन गौरव तपोमूर्ति मुनिश्री ताराचंदजी स्वामी का समाधिमरण

सरदारशहर – 28 अप्रैल 2019 को वीतराग पथ पर अग्रसर तेरापंथ धर्मसंघ के शासन गौरव मुनिश्री ताराचन्दजी स्वामी ने 38 दिनों के कठोरतम त्याग और तप के साथ समाधिमरण के माध्यम से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया और मृत्यु को महोत्सव का रूप देकर अमर बन गए। आपका व्यक्तित्व और कर्तृत्व दोनों ही विराट थे। आपके जीवन में विद्वता और विनम्रता तथा श्रद्धा और समर्पण का अद्भुत संगम था। आप इस संघ रूपी नन्दनवन में अपने नाम को सार्थक कर तारे बनकर चमके, फूल की तरह महके और अपनी साधना की सौरभ चारों ओर फैलाकर वीतराग पथ पर अग्रसर हो गए। ऐसे महान त्यागी, तपस्वी एवं उच्च कोटि के साधक मुनिश्री को संपूर्ण महिला समाज की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

बहनों! नौ दिन में तेरापंथ धर्मसंघ के दो महान संतों के महाप्रयाण से चतुर्विध धर्मसंघ में बहुत बड़ी अपूरणीय क्षति हुई है। हम उनके जीवन के उत्तम गुणों को आत्मसात करने का संकल्प कर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करें।

भावना सेवा

एकादशम अधिशास्ता महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ दक्षिण भारत में अहिंसा यात्रा द्वारा जन-जन में नैतिकता, नशामुक्ति एवं सद्भावना का संदेश पहुँचाने हेतु अहर्निश प्रयासरत है। इस यात्रा में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल को भी पूज्य प्रवर के आशीर्वाद एवं मातृहृदया असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की कृपा से कर्म निर्जरा के महनीय उपक्रम रास्ते की सेवा ''भावना'' से जुड़ने का विशेष सौभाग्य प्राप्त हुआ है। 28 नवम्बर 2018 को चैन्नई से आरंभ इस वर्ष की सेवा का अंतिम पड़ाव 19 जून 2019 को बेंगलुरू में होगा। बहनों लगभग 7 माह की इस यात्रा में छोटे-बड़े सभी क्षेत्रों से अच्छा प्रतिसाद मिला व अनेक बहनों ने भविष्य में भी इस क्रम से जुड़े रहने का संकल्प लिया। राष्ट्रीय पदाधिकारी बहनों ने भी इस क्रम से जुड़कर पूज्यवरों की सेवा-सन्निधि का लाभ उठाया। **सभी सेवार्थी बहिनों के प्रति अ.भा.ते.म.मं. की ओर से हार्दिक धन्यवाद। भावना सेवा हेतु विशेष सहयोग प्रदान करने के लिए श्री देवराज मूलचंदजी नाहर परिवार (बेंगलुरु), व्यवस्था में सहयोगी सभी बहनें, चौके में सेवा देने वाले सभी कर्मचारीगण एवं प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोगी बनने वाले समस्त अनुदान दाताओं के प्रति अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल हार्दिक धन्यवाद व कृतज्ञता ज्ञापित करता है।**

निदेशिका
श्रीमती शोभा दुगड़

संयोजिका
श्रीमती कांता तातेड़ श्रीमती लीना दुगड़

सेवार्थी बहनों की सूची

नाम	क्षेत्र	नाम	क्षेत्र
श्रीमती शांता पुगलिया	रा. ट्रस्टी	श्रीमती चलती देवी जैन	पंजाब
श्रीमती नीलम सेठिया	महामंत्री	श्रीमती किरण जैन	पंजाब
श्रीमती मधु देरासरिया	रा.क.मं. प्रभारी	श्रीमती जयंतीबाई सुराणा	हासन
श्रीमती कांता तातेड़	रा.का.स.	श्रीमती पदमाबाई बरलोट	हासन
श्रीमती लीना दुगड़	रा.का.स.	श्रीमती लीला तातेड़	हासन
श्रीमती उषा जैन	रा.का.स.	श्रीमती ललिता सुराणा	हासन
श्रीमती सीमा बैद	रा.का.स.	श्रीमती सुमन बुरड़	मैसूर
श्रीमती साधना जैन	शहादा	श्रीमती निर्मला मेहर	मैसूर
श्रीमती प्रतिभा जैन	शहादा	श्रीमती इंदु पितलिया	मैसूर
श्रीमती आशा जैन	शहादा	श्रीमती ललिता पितलिया	मैसूर
श्रीमती पुष्पा जैन	शहादा	श्रीमती शांता बाई पितलिया	मैसूर
श्रीमती दमयंती जैन	शहादा	**जून माह की सेवार्थी बहनें**	-----
सेलम महिला मंडल	सेलम	श्रीमती विजयलक्ष्मी आच्छा	मैसूर
श्रीमती सुशीला मेडतवाल	उधना	श्रीमती चंदा दक	मैसूर
श्रीमती अंजु चपलोत	उधना	श्रीमती तारा मेहता	मैसूर
श्रीमती सुनीता कोकड़ा	उधना	श्रीमती नारायणी मेहता	मैसूर
श्रीमती जयमाला छाजेड़	उधना	श्रीमती टीमाबाई दक	नानजागड़ा
श्रीमती सुनीता चोरड़िया	उधना	श्रीमती नीता नगावत	नानजागड़ा
श्रीमती मीना जैन	उधना	श्रीमती तेजयाबाई दक	नानजागड़ा
श्रीमती सज्जन बाई रांका	चैन्नई	श्रीमती ललिता भंडारी	नानजागड़ा
श्रीमती कंचन बाई जैन	चैन्नई	श्रीमती प्रमिला धतेवरा	
श्रीमती राजरानी जैन	पंजाब		

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता जून 2019

सन्दर्भ ग्रंथ : महाप्रज्ञ प्रबोध – 106 से 120 पद्य अर्थ सहित
तेरापंथ का इतिहास पृष्ठ 401 से 425 तक
(गण विशुद्धिकरण हाजरी से प्रभु पंथ तक)

अ. किसने किससे कहा :–

1. ''पुण्यवान व्यक्ति के द्वारा प्रारम्भ किया हुआ कार्य सदैव सफल रहता है।''
2. ''महाप्रज्ञ में तुलसी को देखो और तुलसी में महाप्रज्ञ को देखो।''
3. ''स्थिति का निवेदन करना एक आत्मतोष का विषय है।''
4. ''पुत्र कुपुत्र हो जाता है, परन्तु पिता कुपिता नहीं होता।''
5. ''हमारे धर्मसंघ और मानव जाति के उत्थान में आचार्यवर का महान् योगदान है।'' किसने, कब व कहाँ कहा?

ब. रिक्त स्थान की पूर्ति करें :–

1. बुद्धि ..... और तटस्थ ..... का अपना मूल्य है।
2. लिखत अर्थात् .....
3. मुनि चतुर्भुजजी के छोटे भाई .....
4. संघ के प्रति विश्वसनीयता की शपथ .....
5. व्यवस्था पुरुष थे .....
6. ..... में मघवा मणी, सिरे पंच दिया ठहराय
7. इकतारी अर्थात .....
8. विश्व प्रसिद्ध प्रकाशन संस्थान हार्पर कोलिंस द्वारा प्रकाशित पुस्तक .....
9. वि.स. 1926 में भिक्षु शासन में ..... साध्वियाँ थी।
10. यह स्मृति दिवस सारे संघ को ..... का पाठ पढ़ाता रहेगा।
11. मर्यादा महोत्सव का दूसरा नाम .....
12. पूरबली अर्थात् .....
13. मर्यादा पत्र वाचन को कहते हैं .....
14. मर्यादा महोत्सव के अन्तर्गत ..... एक ऐसा कार्यक्रम जिसकी तुलना लॉटरी खुलने से की जाती है।
15. मर्यादा महोत्सव तेरापंथ की प्रत्येक ..... का एक महान साक्षी ही नहीं किन्तु ..... भी है।

स. गण विशुद्धिकरण हाजरी क्या है ?

नोट : उत्तर पुस्तिका पर अपना नाम पता एवं फोन नं. अवश्य लिखें।
उत्तर महिने की 25 तारीख तक श्रीमती रमन पटावरी के पते पर अवश्य पहुँच जाए।
उत्तर फुल साइज पेज पर हाशिया छोड़ते हुए शुद्ध एवं साफ लिखें।
प्रश्न का उत्तर जितना पूछा जाए उतना ही दें।

श्रीमती रमन पटावरी
SILVER SPRING,
JBS 5 HALDEN AVENUE,
BLOCK - 1, 17-C, KOLKATA - 700105
मोबाईल : 9903518222 / 033–40620395
ई–मेल : raman.patawari@gmail.com

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता जुलाई 2019

सन्दर्भ ग्रंथ : महाप्रज्ञ प्रबोध – 121 से 130 पद्य अर्थ सहित
तेरापंथ का इतिहास पृष्ठ 426 से 447 तक
(प्रभु पंथ से धींगों के महाराज तक)

अ. जोड़ी मिलाओ :–

1.	पार उतारने का सहारा	सबसे बड़ा आगम
2.	पांच कोस	सामुद्रिक विद्वान
3.	डोकरा	मध्य
4.	स्तवकार्य	पतवार
5.	प्रभुपंथ के आचार्य	मुनि सतिदास जी
6.	रेखा विशेषज्ञ	छोटे छोगजी की माता
7.	मझार	सोलह कि.मी.
8.	भगवती	लघु व्याख्या
9.	जयाचार्य के परम मित्र	जयाचार्य
10.	सेरांजी	बड़े छोगजी

ब. संक्षिप्त उत्तर दें – एक शब्द से लेकर एक पंक्ति तक उत्तर दे सकते हैं :–

1. वर्ष 2002 में भारत के तत्कालीन उप प्रधानमंत्री थे –
2. फ्यूरेक अर्थात –
3. मुनि सतिदास जी की दीक्षा कब हुई व किसके द्वारा हुई –
4. जयाचार्य ने किसका जीवन चरित्र उनकी विद्यमानता में ही लिखकर सुना दिया –
5. प्रत्यक्षे गुरवः स्तुत्याः परोक्षे मित्र बान्धवाः का अर्थ –
6. महानिशीथ में क्या उल्लिलिखित है –
7. परम पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी का सपना –
8. जोगी की जटा की तुलना किससे की गई –
9. अहमदाबाद के मेयर श्री हिम्मतसिंह पटेल ने आचार्य वर के कर कमलों में अर्पित की।
10. किस दिन को ''कालजयी महर्षि अभिवंदना'' के रूप में आयोजित किया गया।

स. रिक्त स्थान की पूर्ति करें :–

1. ..... की पुस्तक में किसी भी प्रश्न का एक तथा निर्णीत उत्तर नहीं होता।
2. आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने ..... से अधिक पुस्तकों का प्रणयन किया है।
3. सरदारशहर में तेरापंथ की नींव को गहरा करने में ..... का प्रयास मुख्य रूप से रहा।
4. ..... और ..... इस नगर की संस्कृति बन जाए।
5. साध्वी श्री कल्लूजी एक ..... साध्वी थी
6. ..... और ..... का सम्बन्ध खगोल से है।
7. सरदारबाई का ससुराल ..... में था।

नोट : उत्तर पुस्तिका पर अपना नाम पता एवं फोन नं. अवश्य लिखें।
उत्तर महिने की 25 तारीख तक श्रीमती रमन पटावरी के पते पर अवश्य पहुँच जाए।
उत्तर फुल साइज पेज पर हाशिया छोड़ते हुए शुद्ध एवं साफ लिखें।
प्रश्न का उत्तर जितना पूछा जाए उतना ही दें।

श्रीमती रमन पटावरी
SILVER SPRING,
JBS 5 HALDEN AVENUE,
BLOCK - 1, 17-C, KOLKATA - 700105
मोबाईल : 9903518222 / 033-40620395
ई-मेल : raman.patawari@gmail.com

अप्रैल माह की प्रश्नोत्तरी के 10 भाग्यशाली विजेता

1. माया बैद, साउथ कोलकता
2. अनिता पोखरना, उदयपुर
3. सोनू जैन, अहमदाबाद
4. लता गुप्ता, पंचकूला (हरियाणा)
5. मीना बैद, गुवाहाटी
6. मंजु लता कोठारी, दक्षिण हावड़ा
7. रंजू लूणिया, शिलोंग
8. कमला देवी गधैया, सरदारशहर
9. बेला नाहटा, बालोतरा
10. ज्योति संचेती, गुलाबबाग

कुल प्रविष्टियां 937 में से सर्वाधिक प्रविष्टियां बालोतरा से 119 व अहमदाबाद से 73 प्राप्त हुई।

मई माह के प्रश्नों के उत्तर

अ.

1. साम्यभाव
2. सड़सठ वर्ष
3. सतियां अक्षर
4. टहुको
5. अनुत्तर अभिलेख
6. चौक
7. गाथा प्रणाली
8. संघीय विकास
9. समुच्चय, आचार्य श्री
10. मुद्रांकन

ब.

1. शांति की मिसाइल
2. 32 कवल और 28 कवल
3. मध्यान्ह कालीन गोचरी में लाए गए आहार के संविभाग को
4. जनसत्ता के सम्पादक प्रभाब जोशी ने युवाचार्य महाप्रज्ञजी से
5. उनके प्रत्येक सिंघाड़े पर एक रजोहरण, एक प्रमार्जनी व प्रति साध्वी एक-एक डोरी बनाकर लाने का

स. उसका सम्बन्ध ज्ञान और से लेकर साधन व सतक्रिया होने तक

द. पृष्ठ संख्या 102- पूज्य गुरुदेव से लेकर सुशोभित करें तक

अ.भा.ते.म.मं. के नवगठित शाखा मंडल

बाली-बैलूर (बंगाल) - महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी की विदुषी शिष्या साध्वीश्री स्वर्ण रेखाजी के सान्निध्य में पश्चिम बंगाल के बाली-बैलूर क्षेत्र में नये शाखा मंडल का गठन किया गया एवं शपथ ग्रहण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। बंगाल की राष्ट्रीय प्रभारी श्रीमती पुखराज सेठिया ने नवगठित शाखा की अध्यक्ष श्रीमती कनक डाकलिया, मंत्री श्रीमती प्रीती सिंघी व उनकी पूरी टीम को शपथ ग्रहण करवाई एवं मंडल के प्रति शुभकामना प्रेषित करते हुए संस्था के संविधान, नियमों आदि की जानकारी दी एवं उन्हें क्षेत्रीय संविधान की पुस्तिका भी प्रदान की। नवगठित शाखा मंडल में 21 सदस्य जुड़े।

म्हाड़ (महाराष्ट्र) - अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा संचालित गतिविधियों से आकर्षित होकर छोटे-छोटे क्षेत्र की बहनें भी मंडल का गठन करने के लिए उत्साहित रहती है। चारित्रात्माओं की सन्निधि व प्रेरणा से उनमें विशेष जागरूकता का संचार होता है। ऐसा ही एक नवगठित शाखा मंडल है म्हाड़। महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के म्हाड़ व माणगाँव की बहिनों ने मिलकर तत्वज्ञ संत मुनिश्री जिनेश कुमारजी के सान्निध्य में मंडल का गठन किया। मुनिश्री ने बहिनों को किस प्रकार अपने दायित्व का निर्वहन करना तथा मंडल को आगे बढ़ाने आदि के संदर्भ में प्रेरणा प्रदान की।

लाइफ कोच ट्रेनिंग कोर्स का अंतिम चरण मुंबई में
14, 15, 16 जून 2019

देशभर की बहनों में छिपी प्रतिभा को उजागर कर प्रभावी प्रेरक, कुशल संचालक, निपुण लेखक व प्रखर प्रवक्ता बनाने के उद्देश्य से एक वर्ष पूर्व अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा LCTC का प्रारंभ किया गया। जिसे छह मोड्यूल में विभाजित किया गया। वर्ष भर में Online सिस्टम से संचालित इस कोर्स का अंतिम चरण आगामी दिनांक 14, 15, 16 जून 2019 (शुक्रवार, शनिवार, रविवार) को तेरापंथ सभाभवन, कांदिवली (मुंबई) में आयोजित होने जा रहा है। इसमें जिन संभागियों ने चार मोड्यूल समाप्त कर लिये हैं वो सभी भाग ले सकते हैं।

बहनों! आपको सूचित करते हुए प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि 5 मोडयूल संपन्न करके देशभर से लगभग 60 बहनें इस अंतिम चरण में संभागी बनेगी जिसमें उन्हें व्यक्तित्व विकास के विशेषज्ञों के माध्यम से विशेष ट्रेनिंग दी जायेगी। विभिन्न प्रायोगिक प्रशिक्षण, गेम तथा आकर्षक गतिविधियों के द्वारा उनकी प्रतिभा में निखार लाने का प्रयास किया जायेगा। इस अवसर पर अ.भा.ते.म.मं. के पदाधिकारी एवं राष्ट्रीय टीम के सदस्य भी विशेष रूप से उपस्थित होंगे।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-

जयश्री बडाला - 09867486848 रचना हिरण - 09821385587 रत्ना कोठारी - 9819914206

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल को मिलने वाला अनुदान

2,31,000	समाजभूषण, कल्याण मित्र स्व. श्री विशनदयालजी गोयल व श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. श्रीमती तिलका सुन्दरी गोयल की पुण्य स्मृति में श्रीमती लता सुरेशजी गोयल, कोलकत्ता द्वारा काव्य संग्रह प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।
51,000	हिसार महिला मंडल द्वारा भावना सेवा हेतु।
31,000	विजयनगर (बैंगलुरु) महिला मंडल द्वारा भावना सेवा हेतु।
21,000	सेलम महिला मंडल द्वारा भावना सेवा हेतु।
21,000	उत्तर हावड़ा महिला मंडल द्वारा भावना सेवा हेतु।
21,000	श्रीमती जतन देवी डागा (सरदारशहर-दिल्ली) द्वारा भावना सेवा हेतु।
11,000	मध्य कोलकाता महिला मंडल द्वारा भावना सेवा हेतु।
11,000	बेहाला (कोलकत्ता) महिला मंडल द्वारा भावना सेवा हेतु।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सभी अनुदानदाताओं के प्रति हार्दिक आभार !

महामंत्री कार्यालय : श्रीमती नीलम सेठिया - 28/1, शिवाया नगर, 4th Cross, रेड्डीयुर, सेलम-636004, तमिलनाडु
मो. : 099524 26060 ईमेल neelamsethia@gmail.com

कोषाध्यक्ष कार्यालय : श्रीमती सरिता डागा - 45, जेम एनक्लेव, प्रधान मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर - 302 017
मो. : 094133 39841 ईमेल sarita.daga21@gmail.com

नारीलोक हेतु सम्पर्क करें : श्रीमती सौभाग बैद मो. : 080031 31111 श्रीमती भाग्यश्री कच्छारा मो. : 096199 27369
नारीलोक देखें website : www.abtmm.org

श्रद्धाप्रणत
अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

आचार्य भिक्षु का 294वां जन्म दिवस
262वां बोधि दिवस, 260वां तेरापंथ स्थापना दिवस

इस कलियुग में यह सतयुग सा,
दिव्य रूप जिसने दिखलाया।
जिसके अद्भुत तपस्तेज से
तेरापंथ धरा पर आया।
युगपुरुष श्री आर्य भिक्षु को श्रद्धामय है नमन हमारा।
घोर तमस में भरा जिन्होंने सत्य सूर्य का नया उजारा।

आर्य भिक्षु के कदम कदम पर बिछी रहीं अनगिन बाधाएं
जीवन कष्टों के घेरे में फिर भी गीत सृजन के गाए
ऊँचे रहे इरादे जिसके पल-पल अपना सफल बनाया
तप का तेज देखकर अद्भुत बिखर गए खुद तम के साये
अपने प्रतिभा-बल से जिसने अनदेखा कर अवरोधों को
अभिनव इस गण नंदनवन को सिंचन दे गुलजार कर दिया।।